चन्दामामा
नवम्बर १९७८

DADDY
MUMMY
AND...
I
"ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना. अपने बच्चों की गुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए. ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
FOR SKETCHING COLOURING • SIGNING
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/८, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/G8

नवम्बर १९७८

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : १-२५ वार्षिक चन्दा : १५-००

"देखो, मेरी नयी घड़ी
कितनी सुन्दर है !
बताओ तो मुझे कैसे मिली ? जन्म-दिन का उपहार ?
नहीं । गणित में 100 अंक पाने का इनाम ? नहीं ।
इसे तो मैंने यूकोबैंक में जमा अपनी बचत से
खरीदा है । मेरे अच्छे दोस्त, तुम भी यूकोबैंक में
अपना खाता खोल सकते हो । वहाँ खाता खोलना
एकदम आसान है । वहाँ के लोगों का
व्यवहार बहुत अच्छा है—बिलकुल
दोस्त की तरह । और हाँ, वे अपने
ग्राहकों की पूरी-पूरी मदद भी
करते हैं ।"
UCO/CAS-31 HIN
U
यूनाइटेड कमर्शियल बैंक
जनता को सुखी, स्वावलम्बी बनाने में सहायक

७ गुणोंवाली स्नो व्हाइट धुलाई
BRIGHTY
EASY
SAFETY
WHITEY
NICEY
SAVEY
SOFTY
TATA'S
Magic
brand new
Magic
for brand new whiteness
सफेदू: 'मैं लाता हूं नई सफ़ेदी!'
चमकू: 'चमकू मेरा नाम।
कपड़ों को चमकाना मेरा काम।'
रक्षू: 'कपड़ों का रक्षक हूं मैं!'
सरलू: 'मैं हूं झटपट और आसान!'
अच्छू: 'भीनी भीनी मेरी खुशबू।'
बचतू: 'मैं मैजिक ज्यादा दिन चलाऊं।'
नरमू: 'हाथों के संग कोमलता बरतूं।'
मैजिक
डिटर्जेंट पाउडर आपके कपड़ों को ज्यादा साफ़, ज्यादा उजली और बेहतर धुलाई के लिए ७ तरह से काम करता है।
मुफ़्त

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "जादू का कंबल" प्रेरणाप्रद है।

सितंबर मास की कहानी-शीर्षक प्रतियोगिता का परिणाम

"कला और हकीक़त"

प्रेषक : **मनोजकुमार बोहरा,**
द्वारा एम. जी. एण्ड कंपनी, सुमेरपुर पो. (राज)

अमर वाणी

मितं ददाति हि पिता,
मितं माता, मितं सुतः,
अमितस्य हि दातारं
भर्तारं का न पूजयेत ?

[पिता, माता व पुत्र जो देता है, उसकी सीमा है, पर पति जो देता है, वह असीम है। इसलिए ऐसे पति की पूजा क्यों न की जाय ?]

वर्ष : ३१ नवंबर १९७८ अंक : ३

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

प्रश्नोत्तर

रबीन्दर कुमार बेहरा, कटक (ओरिस्सा)

प्रश्न : क्या बेताल कथाएँ सच हैं? पुराणों को इतिहास मान सकते हैं?

उत्तर : बेताल कथाएँ कल्पित हैं। कल्पनात्मक प्राचीन कथाएँ केवल पच्चीस हैं। उन्हें 'बेताल पंचविंशती' कहते हैं। चन्दामामा में प्रकाशित होनेवाली सैकड़ों बेताल कथाएँ आधुनिक कल्पनात्मक हैं।

पुराण अनेक प्रकार से उत्पन्न होते हैं। कतिपय ऐतिहासिक घटनाएँ कालक्रम में रूप परिवर्तन पाकर कल्पित कथाएँ बन जाती हैं। ऐसी कथाओं में सूक्ष्म रूप से ऐतिहासिक अंश होते हैं। बीरबल, तेनालि रामलिंग, महा मंत्री तिम्मरुसु जैसे अनेक व्यक्ति इस समाज में कल्पित कथाओं के आधार बन गये हैं। उनमें युक्ति और हास्य प्रधानतः होते हैं। मगर ये सत्य नहीं हैं। केवल किसी नीति तथा जीवित सत्य का निरूपण करने के लिए कई कल्पित कथाएं उत्पन्न हुई हैं।

जी. रमणा रेड्डी, पल्लेल कुप्पम (आन्ध्र)

प्र : चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ने से वह सूर्य ग्रहण कैसे बन जाती है?

उ : सूर्य के प्रकाश को चन्द्रमा रोकता है और उसकी छाया जब पृथ्वी पर पड़ती है, तब उस छाया के प्रदेश में रहनेवालों को सूर्य दिखाई नहीं देता। इसलिए वह सूर्य ग्रहण कहलाता है। 'ग्रहण' शब्द का अर्थ पकड़ना है। यह अर्थ सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण के लिए लागू नहीं होता।

वैं. सत्यनारायण, बेल्लमपल्लि (आन्ध्र)

प्र : श्रम का फल बताया जाता है। मगर श्रम करनेवालों की अपेक्षा पूंजी लगाकर घर पर बैठनेवालों को अधिक फल मिलता है। यह कैसा फल कहा जा सकता है?

उ : शारीरिक श्रम करनेवालों की तुलना पूंजीपतियों के साथ करने से फ़ायदा ही क्या है? प्रत्येक क्षेत्र में श्रम के अनुसार फल होता है। पूंजीपतियों में भी घर पर बैठनेवालों की अपेक्षा श्रम करनेवालों को अधिक लाभ होता है।

लब्ध प्रणाश

[६४]

इस प्रकार सभी मेंढ़कों को निगलते साँप ने एक दिन गंगादत्त के पुत्र पितृदत्त को भी निगल डाला। यह समाचार सुनकर गंगादत्त विलाप करने लगा, इस पर उसकी पत्नी ने रोष में आकर डांटा–"हे कठिन हृदयवाले! अब रोने से क्या फ़ायदा? तुमने अपनी जाति का सर्वनाश कर डाला है। अब तुम्हें बचानेवाला कौन हैं? हे मूर्ख! अब भी सही, इस महा नरक से बचने का या इस क्रूर सर्प का संहार करने का कोई उपाय सोच लो।"

अंत में सभी मेंढ़क समाप्त हुए, केवल गंगादत्त बच रहा। इस पर साँप ने कहा–"गंगादत्त! मुझे बड़ी भूख लगी है। सारे मेंढ़क खतम हो गये हैं। तुम मुझे यहाँ पर ले आये, इस वज़ह से मुझे खाने के लिए कोई और चीज़ दिखा दो।"

इस पर मेंढ़क ने समझाया–"दोस्त! मेरे ज़िंदा रहते तुम्हें चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यदि तुम मुझे किसी तालाब या कुएँ में जाने दोगे, तो मैं ऐसा उपाय करूँगा जिससे कुछ और मेंढ़क यहाँ पर आ जायें। इस प्रकार तुम्हें पर्याप्त खाना मिल जाएगा।"

"तुम तो मेरे लिए भाई के समान हो! इसलिए तुम्हें मैं खा नहीं सकता। तुम अपने कथनानुसार करके दिखाओगे तो मेरे लिए पिता के समान बन जाओगे। इसलिए तुम जैसा करना चाहते हो, करो।" साँप ने उत्तर दिया।

इसके बाद मेंढ़क उबहन की मदद से बाहर गया। एक दूसरें कुएँ में पहुँचकर वहाँ के मेंढ़कों में मिल गया। साँप प्रियदर्शन अपने मित्र गंगादत्त नामक मेंढ़क

के कई दिन तक लौटते न देख उसके इंतज़ार में थोड़े दिन जैसे तैसे गुजारता रहा। आखिर उसी कुएँ में एक दूसरे बिल में स्थित गिरगिट से बोला–"दोस्त! क्या तुम मेरी एक मदद कर सकते हो? तुम गंगादत्त नामक मेंढ़क की खोज करके उससे मेरी ओर से बतला दो–"अन्य मेंढ़क भले ही न आवे, तुम जल्दी आ जाओ। तुम्हारे बिना मैं ज़िंदा नहीं रह सकता। मैं किसी भी प्रकार से तुम्हारी हानि नहीं करूँगा। अगर मैं अपना वचन भंग कर देता हूँ तो समझ लो, मैंने जो कुछ पुण्य कमाया है, वह तुम्हारा हो जाएगा।"

जल्दी ही गिरगिट गंगादत्त से मिलकर बोला–"तुम्हारा मित्र प्रियदर्शन बड़ी आतुरता के साथ तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। जल्दी जाकर तुम उनसे मिल लो। उसने तुम से यह बताने को कहा है कि वह तुम्हारी हानि नहीं करेगा, यदि करेगा तो उसका सारा पुण्य तुम्हें प्राप्त हो जाएगा।"

ये बातें सुन मेंढ़क गंगादत्त बोला–"भूखा आदमी सब तरह के पाप करने को तैयार हो जाएगा। दुर्बल व्यक्ति में दया नामक कोई चीज़ नहीं होती। तुम जाकर प्रियदर्शन से कह दो कि गंगादत्त तुम्हारे निवासवाले उस कुएँ में फिर लौटकर नहीं आएगा।" यों समझाकर मेंढ़क उत्साह के साथ नये कुएँ के जल में कूद पड़ा।

बंदर ने मगर मच्छ को यह कहानी सुनाकर कहा–"अरे दुष्ट! पापी! गंगादत्त जैसे मैं भी फिर से मौत के मुंह में नहीं जाऊँगा।"

"मेरे मित्र! ऐसा मत कहो! हमारे घर आकर मुझे कृतघ्नता रूपी पाप से मुक्त करो। मेरा आतिथ्य स्वीकार करो। वरना मैं अनशन करके आत्महत्या कर लूंगा। यह पाप तुम्हीं को लगेगा।" मगर मच्छ ने अपना निर्णय सुनाया।

"अरे मूर्ख! एक बार मृत्यु के मुंह से निकलकर फिर उसमें जाने के लिए क्या तुमने मुझे लंबकर्ण मान लिया है? उसने एक बार सिंह के अपार बल-साहस को देख अपने प्राण बचाये, लेकिन कलेजा व और कान न होने के कारण वह पुनः धोखा खा गया और मौत के मुंह में फँस गया।" बंदर ने कहा।

"दोस्त! वह लंबकर्ण कौन है? उसने मौत के मुंह से बचकर फिर से कैसे मौत को वरण किया है? वह कैसी कहानी है?" मगर मच्छ के पूछने पर बंदर ने यों सुनाया:

कलेजा और कान विहीन गधे की कहानी

एक घने जंगल में कराळ केसर नामक एक सिंह रहा करता था। धूसरकम नामक एक सियार सदा उसके साथ लगा रहता था। एक बार सिंह एक जंगली हाथी से लड़कर भयंकर रूप से घायल हुआ और वह हिलने व डुलने की स्थिति में न था।

सिंह शिकार खेल नहीं पाता था, इस कारण सियार को खाना न मिला और वह एकदम कमजोर हो गया।

दो दिन तक घोर उपवास के बाद उसने सिंह से कहा—"महाराज! मैं भूख की पीड़ा से चलने की स्थिति में नहीं हूँ, मैं आप की सेवा कैसे कर सकता हूँ?"

"तुम किसी जानवर को प्रलोभन देकर यहाँ पर ले आओ। मैं किसी उपाय से

तुम्हारे वास्ते उसे मार डालूंगा ।" सिंह ने सियार को समझाया ।

किसी जानवर की खोज में सियार समीप के एक गाँव में गया । गाँव के तालाब की मेंड पर बड़ी मुश्किल से घास चरनेवाले लंबकर्ण नामक गधे को देखा । उससे कहा–"मामाजी! नमस्कार! तुम्हें देख जमाना हो गया है । तुम ऐसे कमज़ोर कैसे हो गये ?"

"क्या करूँ दामाद? धोबी मुझ से कसकर दिन-भर चाकरी कराता है, मगर मुट्ठी भर घास तक नहीं डालता । तुम्हीं बताओ, धूल धूसरित घास के इन तिनकों को खाने से ताक़त कहाँ से आएगी ?" गधे ने जवाब दिया ।

"हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो! लेकिन मामाजी! सामने दीखनेवाले जंगल के किनारे नदी के तट पर हरी-भरी घास है । वहाँ पर आ जाओ । मेरे साथ गप्पे लड़ाते मजे से घास चर सकते हो न?" सियार ने कहा ।

"दामाद! तुम्हारा कहना सही है । लेकिन मुझ जैसे पालतू जानवर उधर जायें तो जंगल के खूँख्वार जानवर हमें मार डालेंगे । चाहे वह जगह जैसी भी बढ़िया क्यों न हो, मेरे लिए फ़ायदा ही क्या है?" गधे ने अपनी शंका प्रकट की ।

"ऐसा कभी मत सोचो! वह प्रदेश मेरे अधीन में है । मेरी अनुमति के बिना वहाँ पर एक कीड़ा भी प्रवेश नहीं कर सकता । अलावा इसके तुम्हारे मालिक जैसे क्रूर व्यक्तियों से तंग आकर तीन मादा गधे वहाँ पर आश्रय लिये हुए हैं । वहाँ की पुष्टिकर घास खाकर निर्मल जल पीकर इस तरह बदल गई हैं कि उन्हें गधों के रूप में पहचानना भी मुश्किल है । वे तो अच्छी यौवनावस्था में हैं । उनकी शादी अभी तक नहीं हुई है । मुझ से बार बार कहती हैं कि मैं उनके वास्ते किसी गाँव से एक अच्छे पति को ले जाऊँ । इसीलिए मैं तुम को ले जाने आया हूँ ।" सियार ने समझाया ।
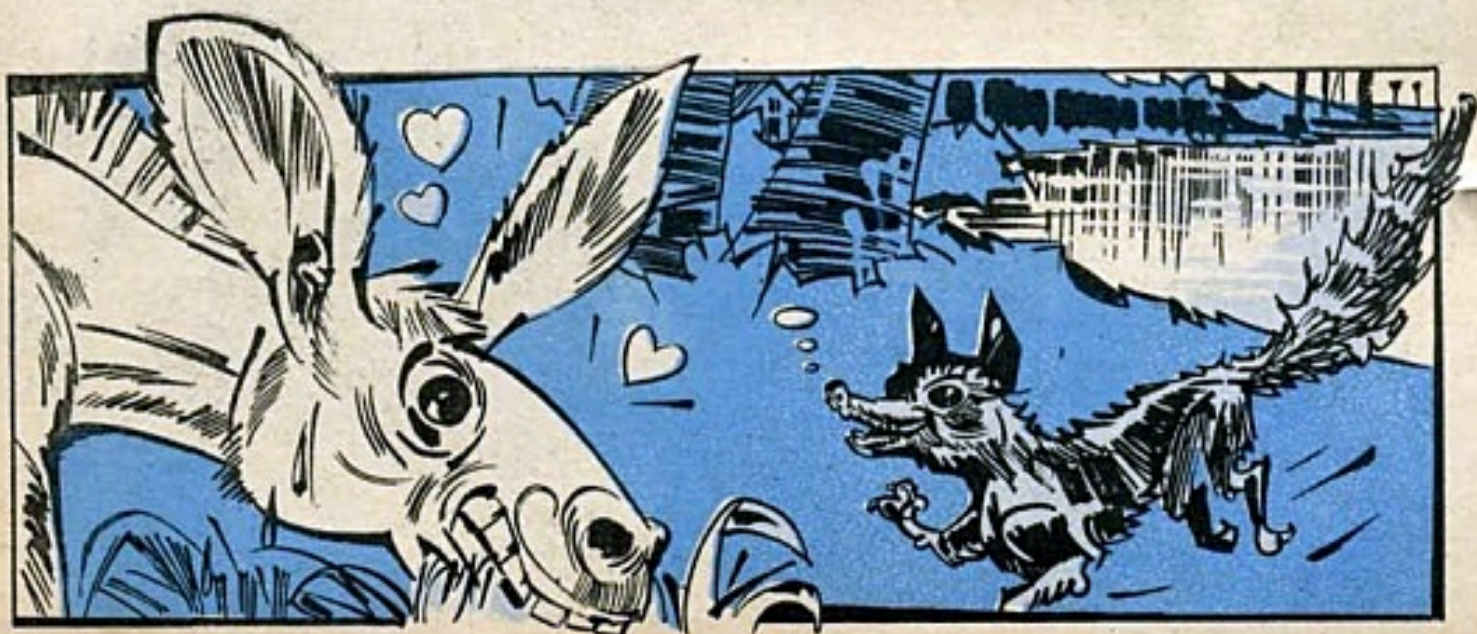
भल्लूक मांत्रिक

[४]

[जल प्रपात के पीछे से प्रवेश करनेवाले भल्लूक मांत्रिक ने कालीवर्मा के साहस की प्रशंसा की। उसी वक्त राजा जितकेतु का मंत्री पहुँचा। मांत्रिक ने उसे डराया और बधिक के भैंसे पर सवार कराकर सब को राजधानी की ओर बढ़ने का आदेश दिया। कालीवर्मा ने मांत्रिक से नाराज़ हो तलवार खींची। बाद...]

भल्लूक मांत्रिक पल भर के लिए कालीवर्मा की बातें सुन स्तब्ध रह गया, उसने सब चेहरों को परखते उन पर नज़र डाली। मंत्री जीवगुप्त को छोड़ बाक़ी सभी लोग सहमे हुए थे। जीवगुप्त भैंसे को हांककर कालीवर्मा के निकट जाने को हुआ। इस पर भल्लूक मांत्रिक ने उसे रोकते हुए कड़क कर पूछा–"अजी मंत्री महोदय! बताओ, अब तुम्हारी कैसी योजना है? क्या कालीवर्मा को मेरे विरुद्ध उकसाना चाहते हो?"

यह सवाल सुनकर जीवगुप्त सन्न रह गया। फिर संभलकर शांत स्वर में बोला–"महाशय! आप मुझे गलत समझ रहे हैं! मैं इस युवक को समझाने जा रहा था कि आप जैसे महा मांत्रिकों के आदेशों का पालन करना हर हालत में हितकर होता है।"

फिर से जल प्रपात के पीछेवाली गुफा के अन्दर चले जाओगे और मैं अपने गाँव पहुँचकर खेती करते अपनी ज़िंदगी मजे से बिताऊँगा ।" कालीवर्मा ने उत्तर दिया ।

"ओह! तुम जितने हिम्मतवर हो, उतने भोले भी हो!" ये शब्द कहकर भल्लूक मांत्रिक ने जीवगुप्त से पूछा– "अजी मंत्री महोदय, साफ़-साफ़ बतला दो कि कालीवर्मा के अपने गाँव पहुँचने के बाद तुम उसे बन्दी बनाने के लिए कितने सैनिकों को भेजने की राजा को सलाह देनेवाले हो? मैं तुम्हारे दिल की बात ताड़ सकता हूँ । अगर तुम झूठ बोलोगे तो मैंने जैसे इस ठूंठ को भस्म कर दिया है, वैसे ही तुम्हें भी भस्म कर दूंगा ।" ये शब्द कहते मांत्रिक ने अपना मंत्र दण्ड ऊपर उठाया ।

जीवगुप्त जान के डर से थर थर कांपते हुए बोला–"आप ने मेरे विचारों को सही ढंग से भांप लिया, इसलिए छिपाने से कोई प्रयोजन नहीं है । मैं महाराजा जितकेतु का नमक खाता हूँ, इसलिए उनका हित चाहते हुए कालीवर्मा का वध कराने की सलाह देना मेरे लिए आवश्यक ही है न? मैं आप से एक बार निवेदन करता हूँ कि एक मंत्री की हैसियत से यह मेरा कर्तव्य भी हो जाता है ।"

यह उत्तर पाकर भल्लूक मांत्रिक मुस्कुराते हुए बोला–"तुम जिस युवक कालीवर्मा की बात करते हो, वही तुम सब को आदेश देने जा रहा है । सावधान रहो ।" फिर तलवार खींचकर अपनी ओर क्रुद्ध दृष्टि प्रसारित करने वाले कालीवर्मा से बोला–"कालीवर्मा! जल्दबाजी मत करो । सच बात यह है कि तुम ज़िंदगी का ज्यादा अनुभव नहीं रखते । क्या तुमने यह भी सोचा है कि इस हालत में हम दोनों अपने अपने रास्ते चल देंगे तो क्या होनेवाला है?"

"इस संबंध में मुझे ज्यादा सोचने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती! तुम

इस पर भल्लूक मांत्रिक ने जोर से अपने मंत्र दण्ड को जमीन पर दे मारा, तब कहा–"कालीवर्मा, सुनते हो न? अब चन्द्रशिला नगर के इस राज्य में तुम्हारी कोई सुरक्षा नहीं है।"

अब जाकर कालीवर्मा को अपना हाल मालूम हो गया। भारी सेना रखनेवाले जितकेतु राजा का अकेले अथवा मुट्ठी भर साथियों की मदद से सामना करना नामुमकिन है। अब उसके सामने दो ही रास्ते हैं–राजा जितकेतु की गद्दी पर अधिकार करना या यह संभव न हुआ तो उस देश को छोड़कर भाग जाना...

कालीवर्मा यों विचार करते तलवार को म्यान में रखकर भल्लूक मांत्रिक से बोला–"गुरु, आप का कहना सच है! मेरे अपने हित के संबंध में मुझसे ज्यादा मुझे पाल-पोसकर बड़ा करनेवाले बलभद्र नामक नौकर और आप ही ज्यादा जानते हैं। अब मुझे कैसा आदेश दे रहे हैं?"

भल्लूक मांत्रिक कालीवर्मा के कंधे पर अपने मंत्र-दण्ड का स्पर्श कराकर बोला–"कालीवर्मा! तुम्हारी भाग्यदेवी ने ही तुम्हें प्रोत्साहित कर मुझे गुरु के रूप में संबोधित करने की प्रेरणा दी है। शाबाश! मैं तुम्हें आदेश नहीं दूंगा; सलाहें दूंगा। इस वक़्त हम सब राजधानी नगर में जा रहे हैं। हमें देखना है कि राजा जितकेतु का दर्प कैसा है?" फिर मंत्री की ओर मुखातिब हो बोला–"अजी मंत्री महोदय, मैं अब भैंसे के वाहन पर सवार होने जा रहा हूँ। तुम आगे-आगे चलते उसकी नाक में कसे रस्से पकड़ कर मार्ग दिखाओ।"

मंत्री जीवगुप्त चुपचाप भैंसे पर से उतर पड़ा और उसके रस्से कस लिये। भल्लूक मांत्रिक भैंसे पर सवार हो चारों ओर नज़र दौड़ाकर बोला–"बहुत समय पूर्व इस दुनिया में रास्ता भटकनेवाले यमराज के एक दूत का वाहन है यह

भैंसा। क्या इस बात पर यक़ीन न करनेवाला कोई तुम लोगों में है ?"

किसी ने उस बात का खंडन नहीं किया, मगर बधिक विस्मय में आकर मन ही मन गुनगुनाने लगा। वह उस भैंसे को बचपन में ही एक गरीब किसान के हाथ से एक कौड़ी भी चुकाये बिना ज़बर्दस्ती ले गया था। उसके मालिक को बधिक ने यह आश्वासन दिया था कि कभी किसी कारणवश राजा उस किसान पर नाराज़ हो शिरच्छेद का आदेश दे तो वह उसे मुक्त करेगा।

भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्र दण्ड को भैंसे के सर पर टिकाकर कहा–"हे मेरे किंकर! क्षुद्र मानव के हाथ पड़कर अपनी जन्मजात अपूर्व शक्तियों को खोने की चिंता करते हो? ऐसी कोई बात नहीं! सुनो, पृथ्वी पर से एक दो गज की ऊँचाई तक हवा में उड़कर नगर की दिशा में थोड़ी दूर तक यात्रा करो।"

इसके दूसरे ही क्षण भैंसे ने अपने नासापुटों से आंधी की तेजी के साथ साँस बाहर छोड़ दी, सर उठाकर घनघोर गर्जन किया, तब हवा में उड़कर नगर की ओर चल पड़ा। उस वक़्त भैंसे के रस्सों को छोड़ मंत्री जीवगुप्त गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ पड़ा।

थोड़ी दूर जाने के बाद भल्लूक मांत्रिक ने भैंसे को जमीन पर उतारा, मंत्री ने ज्यों ही उसके रस्से पकड़ लिये, तब पीछे चलनेवालों की ओर देख मांत्रिक बोला–"देखते हो न? महामंत्री की कैसी दुर्गति हो गई है? मैं इसके मालिक राजा जितकेतु को भी इसी प्रकार की सजा देने जा रहा हूँ।"

इस दृश्य को चुपचाप देखते घोड़े पर सवार कालीवर्मा मांत्रिक के समीप जाकर बोला–"मैं आप को अपने गुरु मानता हूँ। पर यह मत समझिये कि आप मेरी इच्छा के विरुद्ध दिये जानेवाले आदेशों का भी मैं पालन करूँगा। क्या सचमुच आप उस

दुष्ट जितकेतु राजा को दण्ड देने जा रहे हैं ?"

"गुरु-शिष्य बनने के बाद गुरु ऐसे ही आदेश देंगे जिन से शिष्य का हित हो। हाँ, यह बताओ, क्या तुम राजा जितकेतु की गद्दी पाना चाहतें हो ?" भल्लूक मांत्रिक ने कालीवर्मा के चेहरे को परखते हुए पूछा।

"मैं ऐसा कोई प्रलोभन नहीं रखता। मैं बस, यही चाहता हूँ कि वह राजा निर्दोष लोगों को शिरच्छेद देने का दण्ड देना बंद कर दे।" कालीवर्मा ने उत्तर दिया।

"मैं कोशिश करके देखता हूँ कालीवर्मा, जो लोग जन्म से ही गद्दी के वारिस बन जाते हैं, जितकेतु जैसे लोगों में शीघ्र मानसिक परिवर्तन नहीं होता। क्यों मंत्री ? मैं ठीक कहता हूँ न ?" भल्लूक मांत्रिक ने पूछा।

"महा मांत्रिक ! आप ने ख़ूब कहा !" जीवगुप्त ने मांत्रिक के कथन का समर्थन किया।

इसके बाद सबने मिलकर नगर की ओर थोड़ी दूर तक की यात्रा की। तब दो अश्वारोही तेजी के साथ उनके सामने आये, उन्हें रोकते हुए बोले–"भैंसे पर सन्यासी को सवार कराकर रेशमी वस्त्र और सुवर्ण कुंडल धारण करनेवाले को आगे चलवाते कैसे जा रहे हैं ? काले वस्त्र धारण कर पिशाच जैसे दीखनेवाले का पंच कल्याणी जैसे घोड़े पर सवार कराते हैं ? तुम लोग आखिर कौन हो ?'

कालीवर्मा आश्विकों को उत्तर देने जा रहा था, तब भल्लूक मांत्रिक जोर से हँस पड़ा और बोला–"तब तो तुम लोग राजा जितकेतु के सैनिक नहीं हो। इसीलिए तुम लोग हम को पहचान नहीं पाये। हम यह बात खुद भूल गये हैं कि हम वास्तव में कौन हैं ? यही बात जानने के लिए हम दूर दिखाई देनेवाले उस नगर में जा रहे हैं।"

"परिहास की ये बातें रहने दो। जानते हो कि हम कौन हैं? हम उदयगिरि के राजा दुर्मुख के सैनिक हैं। हम अभी सिरस वन में जाकर लौट रहे हैं। वहाँ पर हमें कालीवर्मा नामक व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। उसकी लाश भी नहीं मिली। राजा जितकेतु ने अपना वचन भंग किया। इसीलिए हमारे राजा सेना सहित उन पर आक्रमण करने आनेवाले हैं।" राजा दुर्मुख के सैनिकों ने कहा।

"तब तो ये सारी बातें हमें सुनाने की क्या आवश्यकता है? तुम लोग अपने रास्ते लौट सकते हो!" भल्लूक मांत्रिक ने क्रोध में आकर कहा।

इतने में दुर्मुख के आश्विकों में से एक ने बधिक की ओर विस्मय के साथ देखकर ठठाकर हँसते मजाक़ भरे स्वर में कहा–"हाँ, भाई! तुम्हें तो मैं बिलकुल पहचान नहीं पाया। तुम सिरस वन में रहनेवाले बधिक हो न?"

बधिक यह सोचकर परेशान था कि वह सब के बीच अपमानित हो गया है, दांत भींचते परसु उठाकर बोला–"अबे घमण्डी! क्या यह जानते हुए भी कि मैं कौन हूँ? मेरा मजाक़ उड़ा रहे हो? लो, देखो, पीछे के घोड़े पर स्थित लाश को देख रहे हो न? उसका सिर पीछे की ओर कैसे घुमाया गया है? तुम्हारी भी यही हालत होगी, समझें!"

यह उत्तर सुनकर कालीवर्मा उत्साह में आ गया। बधिक की ओर अपने घोड़े को दौड़ाकर तलवार से उसके कंधे पर थपथपाते बोला–"बधिक! तुमने ईंट का जवाब पत्थर से दे दिया। लगे हाथ क्या तुम दुर्मुख के इन अश्विकों के सर भी काट डालोगे?"

"यह सब भल्लूक मांत्रिक की दया है! वे आदेश देंगे तो यह काम करने की मेरी बड़ी इच्छा है। इधर एक-दो हफ़्तों से मेरे परसु ने ख़ून का स्वाद नहीं देखा है।" बधिक ने उत्तर दिया।

इतने में दुर्मुख के अश्विकों में से एक ने अपने घोड़े को ललकारकर ऊँचे स्वर में कहा—"ये लोग कोई मानव भक्षी मालूम होते हैं। मनुष्य का वध करके उसके शव को उल्टी दिशा में घोड़े से बांधकर नगर में ले जा रहे हैं।"

भल्लूक मांत्रिक ने चीत्कार करते उन अश्विकों की ओर देख कालीवर्मा से कहा—"कालीवर्मा! हम इन कमबख्तों के गप्पों को कब तक सुनते रह जायेंगे?"

इसके दूसरे ही क्षण तलवार खींचकर कहा—"अबे दुर्मुख के सेवको! तुम लोग चुपचाप अपने रास्ते चले चलोगे या अपने सर कटाने की इच्छा रखते हो?"

इस पर मंत्री जीवगुप्त के साथ आये दो घुड़ सवार ढाल उठाये तलवार खींचकर दुर्मुख के सैनिकों की ओर अपने घोड़ों को बढ़ाते हुए बोले—"महाशय, यह काम हमें सौंप दीजिए! ये घमण्डी लोग अंट-संट बकते जा रहे हैं!" ये शब्द कहते उन पर टूट पड़े।

दुर्मुख के अश्विक भी तलवार खींचे अपनी आत्मरक्षा का प्रयत्न करते हुए भागते हुए बोले—"हमारे महाराजा दुर्मुख समीप के एक आम के बाग में डेरा डाले हुए हैं। कुछ ही क्षणों में वे प्रवेश करके तुम सब लोगों के सर कटवा डालेंगे।"

इस पर जीवगुप्त के दो घुड़ सवार दुश्मन के घुड़ सवारों को दूर तक भगाते गये, मगर उन तक पहुँच न सकने की हालत में वापस लौट आये।

इतने में जीवगुप्त के सेवकों में से एक चिल्ला उठा—"महा मांत्रिजी! इस बार दुश्मन के दस अश्वारोही हम पर हमला करने आ रहे हैं।"

उसके कथनानुसार दुर्मुख के दस अश्वारोही उनके समीप में आये। मगर उन लोगों ने तलवार खींचकर वार नहीं किया, बल्कि थोड़ी दूर पर ही रुक गये। उनमें से एक व्यक्ति ने एक लंबा पत्र निकालकर ऊँचे स्वर में यों पढ़ा: "राजा

का यह आदेश है कि यहां पर जितने भी लोग हैं, वे सब तुरंत रवाना होकर आम के वन में डेरा डाले हुए महाराजा दुर्मुख की सेवा में हाज़िर हो जाये ।"

यह आदेश सुनकर सभी लोग विस्मय में आ गये। भल्लूक मांत्रिक ने मंत्री जीवगुप्त को अपने भैंसे के वाहन को दुर्मुख के अश्विकों की ओर बढ़ाने का आदेश दिया, तब दुर्मुख के सैनिकों से बोला–"दुर्मुख जैसे महाराजा का आदेश देने पर उसका पालन न करें तो कैसे होगा? तुम सब लोग आम के बाग की ओर चलो ।"

कालीवर्मा ने अचरज में आकर पूछा– "गुरुजी! आप यह क्या कर रहे हैं?"

"कालीवर्मा, शांत हो जाओ। तुम खुद देख लोगे न?" मांत्रिक ने कहा ।

इस पर दुर्मुख के घुड़ सवार उन्हें सीधे आम के बगीचे में ले गये। राजा दुर्मुख एक ऊँचे आसन पर आसीन था। उसके आसन के दोनों तरफ़ दो खड्गधारी सैनिक और थोड़ी दूर पर मंत्री और सलाहकार खड़े हुए थे। भल्लूक मांत्रिक तथा उनके साथ आये हुए लोगों को देख दुर्मुख ने आँखें लाल करके कहा–"अरे दुष्टो! तुम लोगों के बारे में मैं सारी बातें जानता हूँ। मैं बधिक के साथ तुम सबके सर कटवाने जा रहा हूँ। सब से अंत में कालीवर्मा का सर कटवा जाएगा ।"

दुर्मुख के मुंह से ये शब्द सुनकर भल्लूक मांत्रिक चिल्ला उठा–"हे आदि भल्लूक!" फिर भैंसे से उतर पड़ा। जान के डर से थर थर कांपनेवाले बधिक से बोला–"अरे बधिक! इसी क्षण में इस बात का फ़ैसला हो जाएगा कि तुम्हारा सिर दुर्मुख काटेगा या उसका सर तुम काटोगे?" यों कहते मंत्र-दंड के छोर पर स्थित भल्लूक मूर्ति के साथ उसकी पीठ का स्पर्श कराया ।

इसके दूसरे ही क्षण बधिक काले भल्लूक की आकृति में परसु को घुमाते घोड़े पर से उछलकर कूद पड़ा। भयंकर रूप से चिल्लाते राजा दुर्मुख की ओर दौड़ पड़ा। (और है)

जादू का कंबल

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से शव को उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, इसमें कोई संदेह नहीं कि आप किन्हीं अतीत शक्तियों को पाने के लिए यों श्रम उठा रहे हैं। मगर हम यह नहीं कह सकते कि उन शक्तियों के प्राप्त होने पर आप उन्हें त्याग नहीं देंगे। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को चंडीदत्त की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में हिमालयों में आत्मानंद नामक एक वृद्ध योगी रहा करते थे। समीप के लोग अकसर उन्हें देखने आते, तरह तरह के सवाल करके उनकी एकाग्रता में बाधा डालते थे। इसलिए उन्होंने अपने पुराने

बेताल कथाएँ

कंबल पर मंत्र-जल छिड़क दिया और उसे एक तरह् की शक्ति पैदा की। इस कारण वे उस कंबल को ओढ़ लेते, तो वे किसी को दिखाई नहीं देते थे। यह रहस्य कोई जानता न था।

एक दिन आत्मानंद अपने कंबल को कंधे पर डाल एक शिला को पार कर रहे थे। उस वक़्त पैर फिसल जाने के कारण आत्मानंद एक गहरी घाटी में गिर पड़े और बेहोश हो गये। उनका कंबल शिला के समीप में रह गया।

थोड़ी देर बाद उस घाटी के रास्ते एक व्यापारी ने हाट में जाते उस कंबल को देखा। कंबल बहुत ही पुराना था। व्यापारी ने सोचा कि कोई गरीब कुछ न कुछ मूल्य देकर उस कंबल को खरीद लेगा। यों विचार कर कंबल को तह करके गठरी में रख लिया और शोभावती नगर की हाट में पहुँचा। शोभावती नगर में एक बूढ़ा भिखारी जाड़े से कांप रहा था। उसने उस पुराने कंबल को सस्ते में खरीदकर तुरंत उसे ओढ़ लिया। मगर देखते देखते वह भिखारी अदृश्य हो गया। उस दृश्य को देख सभी लोग अचरज में आ गये।

यह समाचार मिनटों में सारे नगर में फैल गया। उन दिनों में शोभावती नगर में चोरियों, ईर्ष्या-द्वेषों, अत्याचारों का बोलबाला था। शोभावती नगर के राजा चन्डीदत्त बहुत प्रयत्न करके भी उन पर नियंत्रण न कर पाये। ऐसी हालत में कंबल की महिमा सभी लोगों पर प्रकट हो गई। दुष्ट और लोभी मनुष्य भिखारी की खोज करने लगे। क्योंकि चोरियाँ करने, स्वेच्छापूर्वक अत्याचार करने व दुश्मन से बदला लेने के लिए ऐसी अदृश्यकरणी बड़ा काम दे सकती थी।

कंबल की मदद से अदृश्य रहनेवाला भिखारी लोगों की बातचीत सुनकर समझ गया कि वह शीघ्र ही किसी खतरे का शिकार होने जा रहा है। उसने अपने हाथ

की लाठी को एक झाड़ी में छिपा दिया और वह बिना किसी प्रकार की आहट किये चुपचाप रहने लगा। उस कंबल के कारण वह भीख भी माँग नहीं पाता था।

उस दिन रात भर वह सोचता रहा। आखिर इस निर्णय पर पहुँचा कि उसके कंबल के वास्ते बड़े बड़े नामी व घराने लोग दौड़-धूप कर रहे हैं। पर उसके लिए तो वह किसी काम का नहीं है। दूसरे दिन सवेरा होते ही वह सब की आँख बचाकर कंबल ओढ़े अदृश्य रूप में राजसभा में पहुँचा। कंबल हटाकर राजा के सामने हाज़िर हुआ, तब बोला—"महाराज, इस कंबल के द्वारा मेरे प्राणों की हानि के अतिरिक्त मुझे किसी प्रकार से शांति और सुख प्राप्त होनेवाला नहीं है। कृपया आप इसे अपने पास ही रखिये।" इन शब्दों के साथ भिखारी ने कंबल उठाकर राजा के हाथ दे दिया। राजा ने स्वयं उसकी जाँच की। उसकी महिमा जान ली, तब भिखारी की ज़िंदगी को आराम से बिताने लायक़ उचित प्रबंध करके राजा ने वह कंबल अपने पास रख लिया।

इस बीच घाटी में गिरे आत्मानंद होश में आये, उन्होंने जान लिया कि उनका कंबल राजा चण्डीदत्त के हाथ पड़ गया है। सीधे शोभावती नगर पहुँचे और उन्होंने राजा से अपना कंबल वापस करने का निवेदन किया। राजा ने अस्वीकार करते हुए कहा—"सुनो, राज्य के हित की दृष्टि
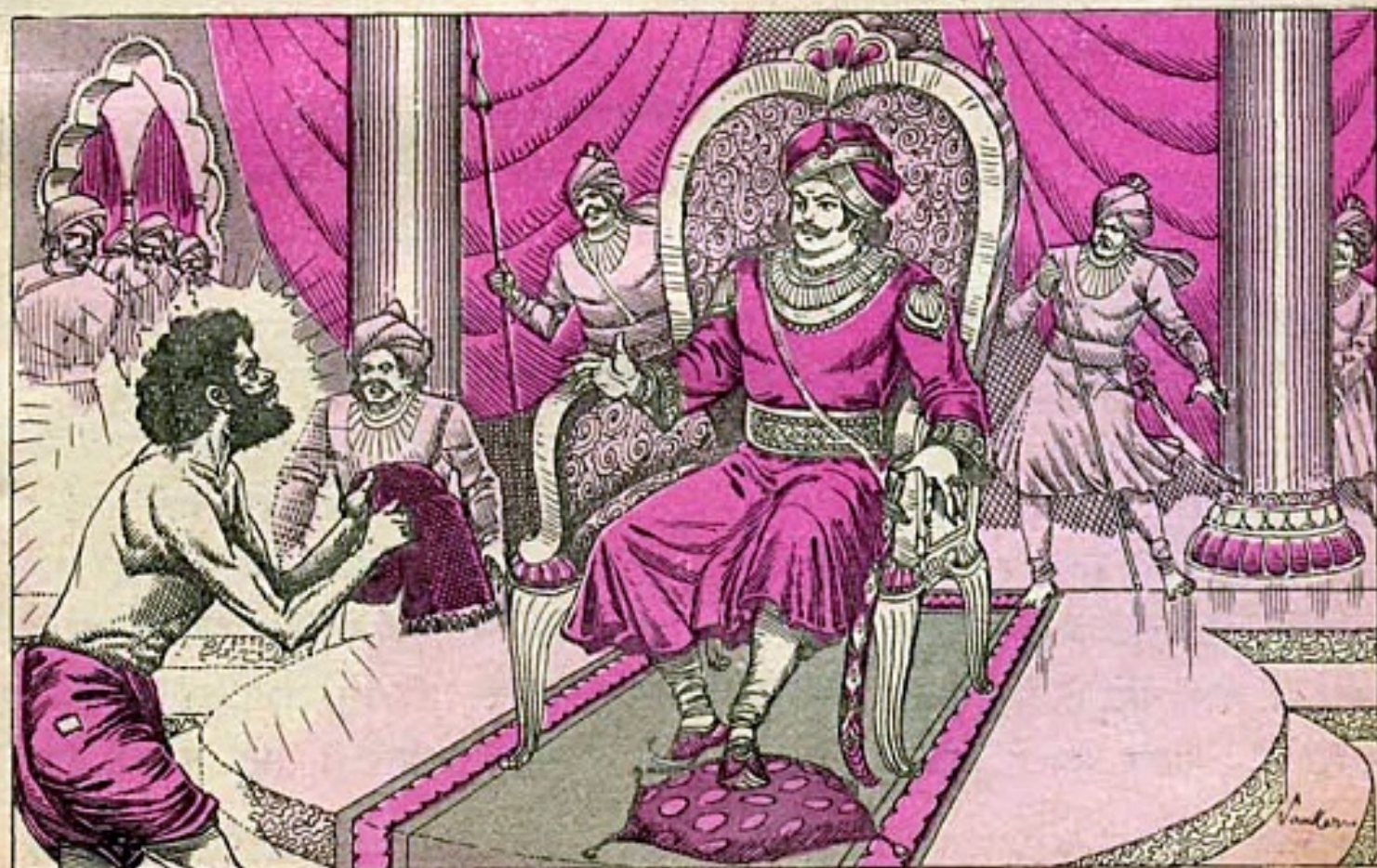
से इस कंबल का मेरे यहाँ रहना ही ज्यादा श्रेयस्कर है।"

इस पर आत्मानंद ने अपने कंबल को राजा के हाथ रखने को मान लिया। फिर भी सुरक्षा के ख्याल से राजा के हाथ में एक रक्षा बंधन बांधकर चले गये।

राजा ने जादू के कंबल की मदद से नगर के अनेक दुष्टों को पकड़कर कठोर दण्ड दिया। जादू के कंबल का पता न लगने के कारण जो षड़यंत्रकारी बहुत ही परेशान थे, उन्हें आखिर साफ़ मालूम हो गया कि वह राजा के हाथ पहुँच गया है। साथ ही चोर, गुंड़े व भ्रष्टाचार करनेवाले अनेक लोग कठोर रूप में दण्डित हुए, इस कारण नगर में अपराध और अत्याचार पूर्ण रूप से घट गये। जिस से चण्डीदत्त का मन शांत हो गया।

एक दिन राजा ने राजनर्तकी चंचला को देखना चाहा। वे कंबल ओढ़कर सब की आँख बचाते चंचला के घर पहुँचे। इसके बाद राजा सब से लुक-छिपकर बराबर चंचला के घर हो आते रहें।

एक दिन चंचला ने जादू के कंबल को दो दिन अपने ही घर रखने का राजा से निवेदन किया। राजा उसकी इच्छा को अस्वीकार नहीं कर पाये, बोले–"तब तो तुम मेरे साथ मेरे अंत:पुर तक अदृश्य रूप में आ जाओ और इस कंबल को अपने साथ वापस ले जाओ।"

दोनों कंबल ओढ़कर राजमहल में पहुँचे। चंचला राजा को राजमहल में छोड़ कंबल ओढ़े वापस मुड़ गई। लौटनेवाली चंचला को देख राजा विस्मय में आ गये। वह राजा को स्पष्ट दिखाई दे रही थी। इसका कारण आत्मानंद ने राजा के हाथ जो रक्षाबंधन बांधा था, वही होगा।

चंचला सीधे अपने घर नहीं गई। राजा चंडीदत्त ने देखा कि चंचला एक दूसरी दिशा में जाकर कोशाध्यक्ष विक्रम के घर चली गई। विक्रम राजा का रिश्तेदार था। राजा चण्डीदत्त यह सोचते लेट

गये कि आखिर चंचला विक्रम के घर क्यों चली गई? पर राजा को नींद न आई।

आधी रात के वक़्त विक्रम कंबल ओढ़े अपने हाथ तलवार लिये राजा के शयन कक्ष में घुस पड़े। राजा ने विक्रम को देख भांप लिया कि वह उन्हीं का वध करने आया हुआ है। उन्होंने झट से तलवार निकाली और विक्रम पर हमला किया। विक्रम ने सोचा कि राजा सोते होंगे, अगर जागते भी हो तो कंबल ओढ़ने के कारण उसे देख न पायेंगे, पर वह राजा के द्वारा हमले की कल्पना तक न कर सका था। इस वजह से वह बड़ी आसानी से राजा के हाथों में मर गया।

इसके बाद राजा के आदेशानुसार सिपाही चंचला को बन्दी बनाकर ले आये। चंचला ने कहा–"महाराज! विक्रम ने सोचा था कि आप का वध करके वह राजा बनेंगे और मेरी सहायता के उपलक्ष्य में मुझे अपनी पट्ट महिषी बनायेंगे। इसी प्रलोभन में पड़कर मैंने विक्रम की मदद की।" इस पर राजा ने चंचला को देश निकाले की सजा सुनाई।

दूसरे दिन राजा हिमालयों में गये, आत्मानंद से मिलकर बोले–"महात्मा! आप अपने कंबल को अपने ही यहाँ रख लीजिए।" इन शब्दों के साथ राजा ने जादू का कंबल उसके हाथ सौंप दिया।
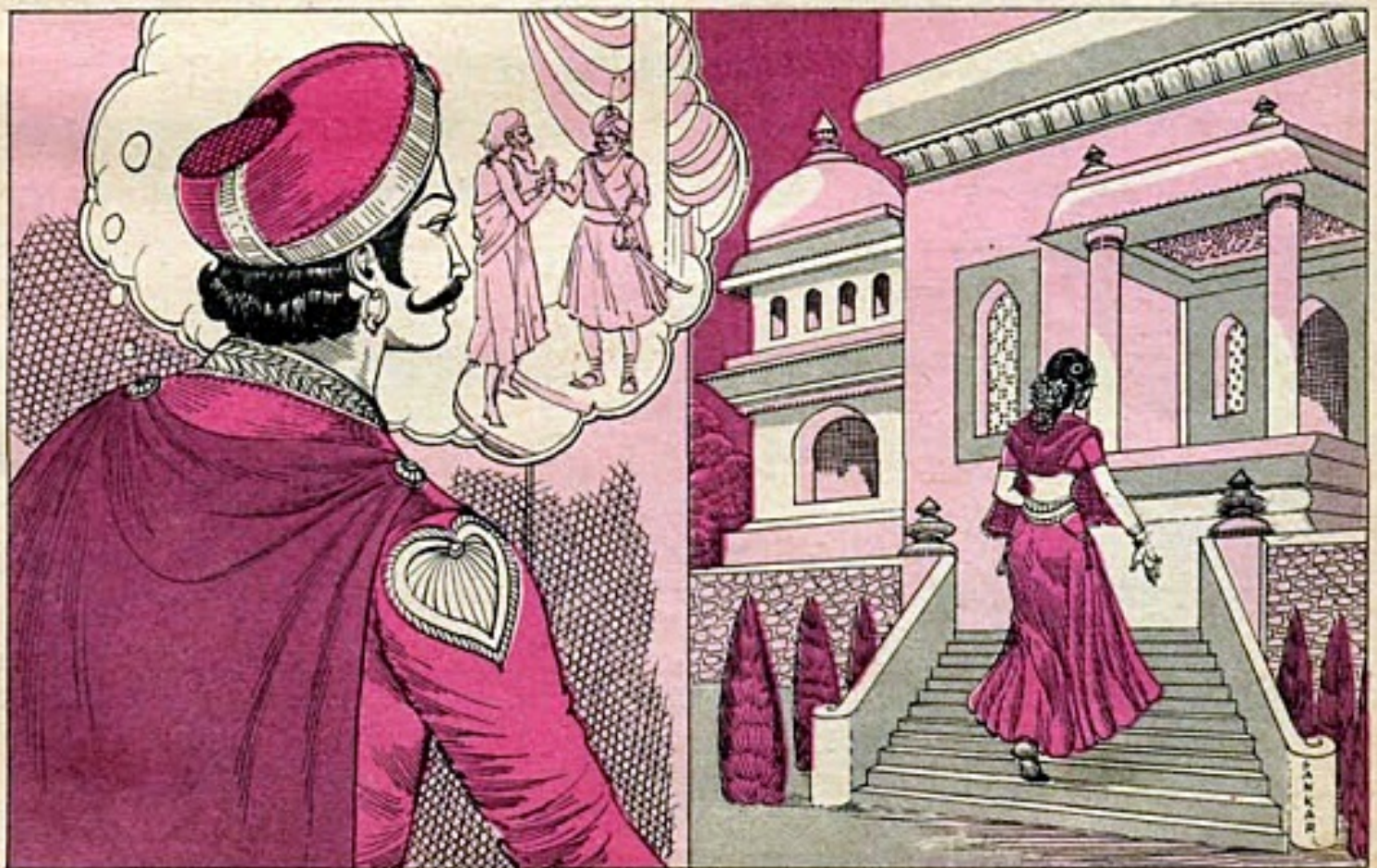
बेताल ने यहाँ तक कहानी सुनाकर कहा–"राजन, मेरे मन में थोड़े से संदेह हैं; आप कृपया उनका निवारण कीजिए। आत्मानंद को अपने कंबल के वास्ते शोभावती नगर में जाकर राजा से अपना कंबल वापस माँगने की क्या ज़रूरत पड़ी? क्या वे चाहते तो अपने वास्ते एक और कंबल की सृष्टि नहीं कर सकते थे? अथवा वे अपने कंबल को दूसरों के अधीन में रखना नहीं चाहते थे? राजा ने उस कंबल की मदद से कई अपराधियों का पता लगाकर उन्हें दण्ड दिया था, ऐसी हालत में कंबल की उपयोगिता जानते हुए भी उन्होंने उसे आत्मानंद को क्यों वापस कर दिया? क्या इस विचार से कि विक्रम जैसे षड़यंत्रकारी अब राज्य भर में कोई नहीं हैं? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया–"महिमा रखनेवाली चीज़ भले लोगों के हाथों में उपकार का काम देती है तो दुष्ट लोगों के हाथों में पड़ने पर हानि कर बैठती है। हम भिखारी के अनुभव द्वारा यह भी जान सकते हैं कि कुछ लोगों के हाथों में वह किसी काम का नहीं रह जाता। उल्टे उसे कंबल के द्वारा ख़तरे का ही डर बना रहा। राजा भले आदमी थे। इसलिए इस भ्रम में पड़ गये कि उस कंबल का उपयोग हित के काम में लाया जा सकता है। पर आत्मानंद जानते थे कि वही कंबल दुष्टों के हाथ में पड़ने पर राजा के लिए कैसे ख़तरनाक सिद्ध होगा। इसी विचार से उन्होंने राजा के हाथ में रक्षा बंधन बांध दिया। इसी से हमें पता चलता है कि आत्मानंद ने शोभावती नगर में जाकर राजा से कंबल की माँग क्यों की? राजा ने भी इस बात को भांपकर वह कंबल आत्मानंद को लौटा दिया।

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

पुरस्कार

देवापुर में रंगनाथ और माधवी नामक एक दंपति थे। रंगनाथ गाँवों में घूमते व्यापार किया करता था। माधवी भोली भाली थी। रंगनाथ माधवी को कई तरह से समझाया करता था कि तुम दूसरों की बातों में आकर धोखा मत खाओ। मगर वह धोखा खा ही जाती थी। फिर भी रंगनाथ जैसे-तैसे अपनी गृहस्थी चलाया करता था।

एक बार रंगनाथ को कहीं किसी दूर के गाँव में जाना पड़ा। चलते वक़्त उसने अपनी पत्नी को समझाया-"हमारे गाँव में चोरियाँ ज़्यादा होने लगी हैं। तुम किसी से बात मत करो। अगर धोखा देनेवाले आ गये तो तुम उन्हें रोककर धुआँ करो।"

उस दिन रात को माधवी अपने घर में अकेली रह गई। वह सो रही थी। बड़ी रात गये बाहर से किसी के द्वारा दर्वाजे पर दस्तक देने की आहट सुनाई दी। माधवी जाग पड़ी। उसने जाकर किवाड़ खोल दिया। तभी दो डाकू भीतर घुस गये। उनके हाथों में कोई गठरियाँ थीं।

डाकू छिप जाने की जगह ढूँढते बोले-"हमारी खोज में सिपाही आ रहे हैं, तुम उन्हें हमारा पता मत बताओ।"

थोड़ी देर में सिपाहियों ने प्रवेश करके दर्वाजा खटखटाया। माधवी ने दर्वाजे खोल दिये। सिपाहियों ने पूछा-"सुनो, अन्दर कोई मर्द है?"

माधवी ने सोचा कि सिपाही उसके पति का समाचार पूछ रहे हैं, उसने ऐसा सर हिलाया, जिसका अर्थ था कि नहीं है। क्योंकि उसका पति उसे हिदायत दे गया था कि किसी से बात मत करो।

"इधर से किसी के भागने की आवाज तुम्हें सुनाई दी?" एक सिपाही ने पूछा।

गंगाधर पांडे

इस बार भी माधवी ने नकारात्मक सर हिलाया। इस पर दूसरे सिपाही ने कहा–"यह तो गूंगी है। देरी करने से चोर कहीं भाग निकलेंगे।" इसके बाद दोनों सिपाही वहाँ से चले गये।

थोड़ी देर बाद दोनों चोर कमरे में आ गये और आपस में कहने लगे–"हम चोरी का माल यहीं पर बांट लेंगे। यह तो गूंगी है। हमारा भेद किसी पर प्रकट न होगा।"

एक चोर ने धन और गहनों के दो भाग किये और थोड़ा ज़्यादावाला हिस्सा खुद लेने को तैयार हुआ। दूसरे ने दोनों हिस्सों को मिलाकर कहा–"तुम मुझे धोखा देना चाहते हो? मैं बांट लेता हूँ।"

दूसरे ने भी दो हिस्से किये और ज़्यादा हिस्सेवाला धन और गहने खुद लेने को हुआ। इस पर पहले ने आपत्ति उठाई।

इसे देखने पर माधवी के दिमाग में यह बात बैठ गई कि ये दोनों धोखेबाज हैं।

आखिर डाकुओं ने माधवी के द्वारा बंटवारा कराने का निश्चय किया। तब दोनों ने माधवी से पूछा–"सुनो बहन! तुम इस धन को हम दोनों के बीच बराबर बांटकर दो। इसमें से थोड़ा हिस्सा हम तुम्हें भी देंगे।"

माधवी ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया और उन्हें बगल का कमरा दिखाते हुए इशारा किया, जिसका मतलब था कि तुम दोनों उस कमरे में जाकर बैठ जाओ। ज्यों ही वे दोनों कमरे के अन्दर चले गये, त्यों ही माधवी ने कुंडी चढ़ाकर ताला लगा दिया। इसके बाद उसने अंगीठी जलाई और उसमें लाल मिर्च डाल दिये। तब वह बरामदे में जाकर लेट गई। डाकू लाल मिर्च के धुएँ से परेशान हो बेहोश से हो गये।

सवेरा होते-होते रंगनाथ लौट आया। सारी बातें अपनी पत्नी के द्वारा जान लीं। तब वह सिपाहियों को बुला लाया और डाकुओं को उनके हाथ सौंप दिया। सब ने माधवी की बड़ी तारीफ़ की। डाकुओं को पकड़ा देने के उपलक्ष्य में माधवी को बढ़िया पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

सिफारिश

एक बार एक राजा के लिए अंगरक्षक की नियुक्ति करने की जिम्मेदारी उनके मंत्री पर आ पड़ी। अंगरक्षक के लिए बुद्धि बल के साथ शारीरिक बल की भी आवश्यकता होती है। पर जो व्यक्ति मंत्री को पसंद आये, वे राजा को पसंद न थे।

इस हालत में सेनापति ने एक व्यक्ति की सिफ़ारिश की। उस की योग्यताएँ मंत्री को पसंद आईं। राजा के सामने ले जाकर मंत्री ने उसकी योग्यताओं का ब्यौरा दिया, तब कहा–"महाराज! हमारे सेनापति ने भी इस व्यक्ति की सिफ़ारिश की है।"

राजा ने कहा–"अगर यह व्यक्ति सारी योग्यताएँ रखता है तो इसे सेनापति के द्वारा सिफ़ारिश करने की क्या जरूरत थी? इसलिए यह अंगरक्षक के पद के लिए अयोग्य है।"
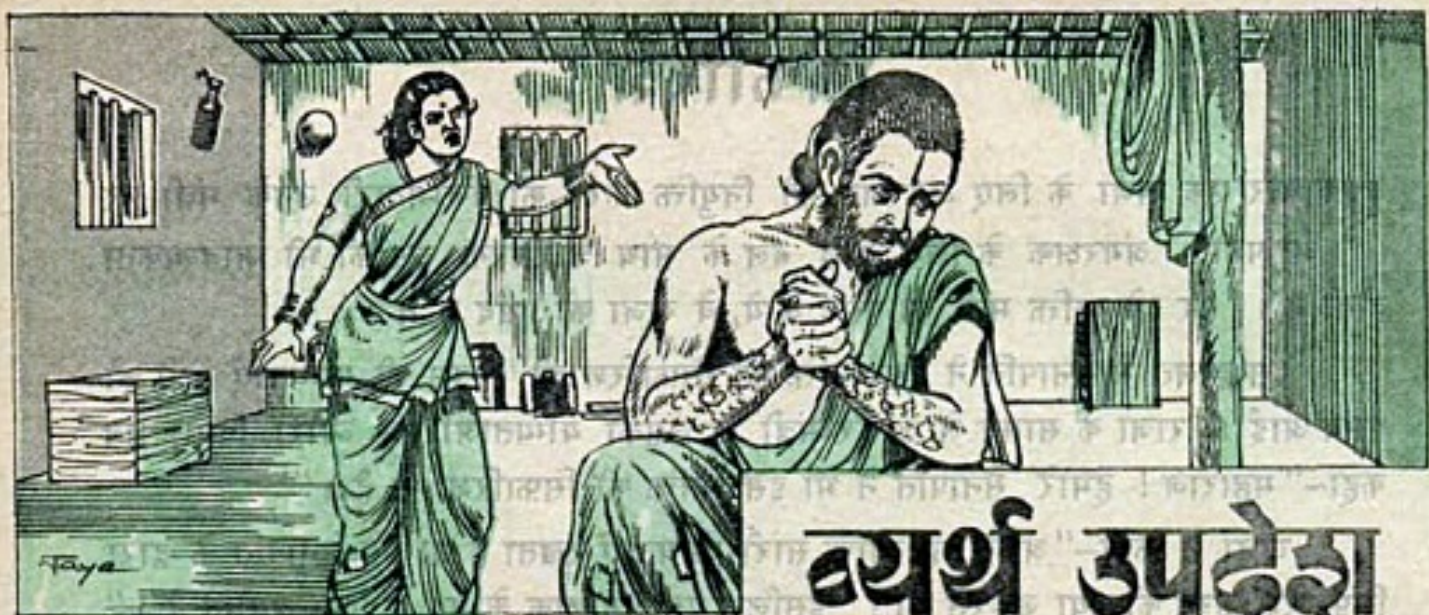
व्यर्थ उपदेश

चक्रधरपुर में विष्णुशर्मा नामक एक गरीब था। उसकी पत्नी बड़ी झगडालू थी। वह विष्णुशर्मा को प्रति दिन गालियाँ देते ताने मारती–"तुम्हारे साथ शादी करके मैं नरक यातनाएँ भोग रही हूँ। अपनी औरत को खाना तक न खिला सकनेवाले तुमने क्यों कर शादी कर ली?"

विष्णुशर्मा ने सोचा कि उसकी पत्नी की बातों में सचाई है। वह अपनी दरिद्रता के लिए बेचारे किसे दोष दे सकता था? आखिर ज़िदगी से ऊबकर उसने सन्यास ले लिया।

विष्णुशर्मा ने अनुभव किया कि गृहस्थ की ज़िदगी की अपेक्षा सन्यासी का जीवन ज्यादा सुखमय है। जो कुछ मिल जाता, खाकर आराम करने के अतिरिक्त सन्यासी के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं है। इस रहस्य को जाने बिना कई गृहस्थ नरक तुल्य जीवन बिता रहे हैं, उपदेशों के द्वारा उनका उद्धार किया जा सकता है। इसके द्वारा मानव जाति का कल्याण किया जा सकता है। यही निर्णय करके वह देशाटन पर चल पड़ा।

विष्णुशर्मा जब श्रीपुर नामक गाँव में पहुँचा, तब एक घर के सामने कई लोगों को क़तार बांधे खड़े हुए देखा। उसने लोगों से इसका कारण पूछा।

लोगों ने उसे बताया–"महानुभाव! यह मकान जीवनलाल नामक एक महाजन का है। ये सोना, चांदी आदि चीज़ें गिरवी रखकर लोगों को उधार देते हैं। ब्याज सहित उधार चुकाने पर लोग अपनी अपनी चीज़ें वापस ले जा सकते हैं।"

उसी वक़्त विष्णुशर्मा जीवनलाल के यहाँ पहुँचा और समझाया–"महाशय, आप यह जो काम कर रहे हैं, यह तो

यमुना दत्ता

महान पाप है। आप के मरते वक़्त यह धन-संपत्ति आप के साथ नहीं जाती।"

"अजी, आप भी कैसे सन्यासी हैं? क्या मैं ये बातें नहीं जानता हूँ जो मुझे उपदेश देने चले? जो लोग धन नहीं कमा पाते हैं, वे ही सन्यासी बनकर दूसरों को उपदेश देते हैं। क्या आप के यहाँ धन होता तो क्या आप सन्यासी बन जाते?" जीवनलाल ने पूछा।

विष्णुशर्मा को लगा कि जीवनलाल की बातों में सचाई है। उसने उसी वक़्त निर्णय कर लिया कि आइंदा किसी को भी धन के बारे में उपदेश नहीं देना है।

दूसरे दिन विष्णुशर्मा धर्मपुरी पहुँचा। वहाँ पर नदी के किनारे एक आदमी को चिंता मग्न बैठे देख उसकी चिंता का कारण पूछा।

"महाशय! मैं अपनी पत्नी के साथ नाव पर बैठकर नदी पार कर रहा था। मंझधार में नाव डूब गई और मेरी पत्नी मर गई। मैं तैरकर किनारे पर आ पहुँचा। मेरी समझ में नहीं आता कि मेरी पत्नी के बिना मुझे न मालूम और कितने दिन कैसे बिता देने हैं? यही मेरी चिंता का कारण है।" ये शब्द कहते वह व्यक्ति रो पड़ा।

विष्णुशर्मा ने सोचा कि उस व्यक्ति को वैराग्य का उपदेश दिया जा सकता है, बोला—"भाई! ये नाते-रिश्ते शाश्वत नहीं हैं। तुम अपनी पत्नी की मृत्यु पर दुखी

हो रहे हो, पर यह समझ नहीं पाते हो कि यह दुख केवल अज्ञान के कारण होता है। मान लो, नदी में डूबकर तुम मर जाते और तुम्हारी पत्नी जीवित रहती तो क्या वह तुम्हारे वास्ते इस प्रकार दुखी होती? यह बात क्या तुमने कभी सोची भी है?"

इस पर उस व्यक्ति ने गुस्से में आकर विष्णुशर्मा को भला-बुरा सुनाते हुए कहा– "तुम मेरी पत्नी के बारे में जानते ही क्या हो? जो इस तरह बक देते हो? पत्नी का प्रेम क्या होता है, यह बात तुम थोड़ी-बहुत जानते तो क्या इस प्रकार तुम सन्यासी बन जाते?"

विष्णुशर्मा को लगा कि उसकी बातों में भी सचाई है। इस पर उसने निश्चय किया कि आइंदा किसी को उपदेश देते वक़्त वैराग्य पैदा करनेवाली बातें नहीं कहनी है।

इसके बाद वह वह चन्द्रगिरी पहुँचा। वहाँ पर उसने एक कसाई को देखा। वह उसी वक़्त एक बकरी को मारकर उसका चमड़ा निकाल करके उसका माँस बेच रहा था।

विष्णुशर्मा ने कसाई के निकट जाकर उपदेश देना शुरू किया–"बेटा, प्राणियों की हत्या करना महान पाप है। तुम इस बकरी को काटकर इसका माँस बेच रहे हो। इसके परिणाम स्वरूप ईश्वर तुम्हें अगले जन्म में एक बकरी के रूप में पैदा करके इस बकरी को कसाई के रूप में पैदा करेंगे और उसके द्वारा तुम्हें मरवा डालेंगे।"

ये बातें सुन कसाई खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला–"अजी पगले सन्यासी! पिछले जन्म में मैं बकरी था। यह बकरी कसाई था। उसने मुझे मारा था, इसीलिए भगवान ने अब मेरे हाथों में इसे मरवा डाला है।"

विष्णुशर्मा को लगा कि उसकी बातों को काटा नहीं जा सकता है। उस दिन से उपदेश देकर जनता के उद्धार करने का विचार बदल डाला।

ज्योतिषी का चुनाव

एक बार अवंती के राजा के दरबारी ज्योतिषी का अचानक देहांत हो गया। उस पद के योग्य व्यक्ति रामशर्मा था। फिर भी राजा ने निस्पक्ष होने का परिचय देने के ख़्याल से ज्योतिषी के चुनाव के लिए ढिंढोरा पिटवाया। सैंकड़ों की संख्या में ज्योतिषी राजा की सेवा में हाज़िर हुए। पर रामशर्मा हाज़िर नहीं हुआ। राजा ने रामशर्मा को बुलवा कर पूछा—"ज्योतिषी के चुनाव के लिए आप क्यों नहीं आये ?"

"मैं यह जानकर हाज़िर नहीं हुआ कि किसी भी हालत में मेरा चुनाव हो ही जायगा। मगर मेरी समझ में न आया कि जो ज्योतिषी यहाँ पर हाज़िर हैं, उन्हें अपने रास्ते खाली हाथ वापस जाना पड़ेगा, यह बात तक न जाननेवाले ये लोग भी कैसे ज्योतिषी हैं ?" रामशर्मा ने उत्तर दिया।

इस पर सारे ज्योतिषी नतमस्तक हो अपने रास्ते लौट गये। तब रामशर्मा दरबारी ज्योतिषी के पद पर नियुक्त हुए।

लोभ का फल

एक कंजूस जमीन्दार के यहाँ गौरी नामक एक रसोइन थी। उसका बेटा गोविंद बागवानी किया करता था। माँ-बेटे कभी बीमार पड़ते तो जमीन्दार उनकी मदद करने से दूर उल्टे उनकी तनखाह काट देता था।

जमीन्दार के यहाँ बीस एकड़ बंजर भूमि थी। उसे उपजाऊ बनाना हो तो काफी धन खर्च करना पड़ता था। गोविंद ने पूछा कि उन बीस एकड़ ज़मीन में से यदि उसे दो एकड़ जमीन दी जाय तो वह उसे उपजाऊ बनायेगा। पर जमीन्दार ने नहीं माना।

गोविंद ने एक दिन जमीन्दार से कहा–"मालिक! मैं रोज़ सपने देखता हूँ। हमारी बंजर भूमि में काली चट्टान के नीचे धन गड़ा हुआ है। कृपया मुझे उसे खोद लेने दीजिए। मैं उससे जमीन-जायदाद ख़रीद लूँगा।" जमीन्दार ने कहा–"वह धन निकाल कर मुझे दे दो, मैं तुम्हें बदले में दो एकड़ जमीन दे दूँगा।"

गोविंद ने एक घड़ा काली चट्टान के समीप गाड़ दिया। उस पर लिख दिया–"इस धन के मिलने के पांच साल बाद ही इस ढक्कन को खोलना होगा, वरना जो खोलेगा, उसे भ्रूण हत्या का पाप लगेगा।" इसके बाद जमीन्दार के सामने ही उस जगह को खोदकर धन का घड़ा उसके हाथ सौंप दिया। जमीन्दार ने उस घड़े को एक जगह सुरक्षित रख दिया और गोविंद को दो एकड़ जमीन दे दी। गोविंद ने कड़ी मेहनत करके उस जमीन को उपजाऊ बनाया और उससे बड़ा फ़ायदा उठाया।

जमीन्दार के पुत्र को एक दिन धन की ज़रूरत पड़ी। उसने अपने पिता की आँख बचा कर घड़े का ढक्कन खोल दिया। उसमें कांच के टुकड़े भरे थे।

बेचारे जमीन्दार ने सोचा–"पांच साल की मीयाद के पहले खोलनेवाले के सर भ्रूण हत्या का पाप लगने का फल शायद यही है।"

महिषासुरमर्दिनी

एक जमाने में राक्षसों का राजा महिषासुर अपनी इच्छा मात्र से भयंकर भैंसे के रूप में बदल सकता था। वह अत्यंत क्रूर और अजेय भी था।

महिषासुर ने सौ वर्ष तक देवताओं को कष्ट दिया और उन्हें स्वर्ग से भगा दिया। देवता पृथ्वी पर छिप गये।

कुछ देवताओं ने त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर के पास जाकर प्रार्थना की कि महिषासुर के मरने का कोई उपाय करें।

त्रिमूर्तियों की क्रोधाग्नि ज्वाला के रूप में ऊपर उठी। उसमें से दुर्गा उत्पन्न हुई। शिवजी ने अपनी शक्ति से उन्हें मुख प्रदान किया। यम ने केश दिये, विष्णु ने चार हाथ और ब्रह्मा ने पैर, अग्नि त्रिनेत्र तथा अन्य देवताओं ने उस देवी को अनेक आभूषण और आयुध प्रदान किये।
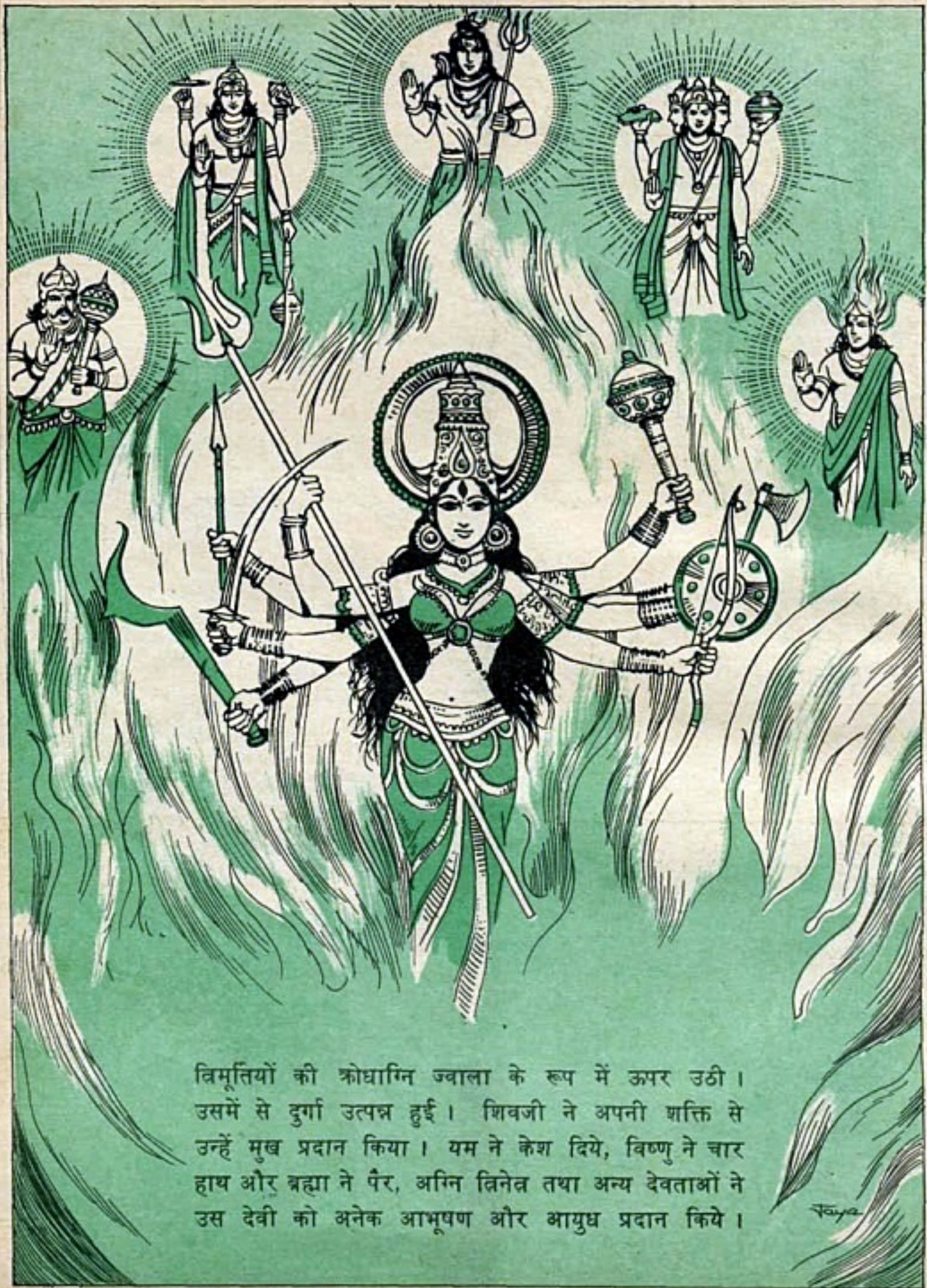
अंत में दुर्गा देवी राक्षसों पर आक्रमण करने निकल पड़ी। यह बात मालूम होने पर राक्षस उनके साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गये। मगर अत्यंत प्रकाशमान उनकी आकृति को देख राक्षस घबरा उठे और अपने नेता के पास दौड़ गये।

राक्षस सेनापतियों ने अपने सैनिकों को देवी को पराजित करने भेजा। पर उनमें से कई लोग देवीजी के वाहन सिंह तथा देवी के हाथ त्रिशूल की बलि हो गये।

महिषासुर को जब मालूम हुआ कि उसके सैनिक व सेनापति मर गये हैं, तब वह क्रोध में आया। जंगली भैंसे का रूप धरकर दुर्गा पर आक्रमण कर बैठा। देवी ने तुरंत उसका सिर काट डाला।

इस पर महिषासुर हाथी का रूप धरकर दुर्गादेवी के वाहन बने सिंह को पकड़ने गया। देवी ने हाथी की सूंड को काट डाला।

तब महिसासुर ने अपने वास्तविक रूप में देवीजी का सामना किया। प्रज्वलित देवी की मूर्ति ने राक्षस की आँखों को चौंधिया दिया। वह ज्यादा देर तक लड़ नहीं पाया।

देवी ने सिंह सहित राक्षस पर आक्रमण किया और अपने त्रिशूल के द्वारा उसका अंत किया। तब जाकर तीनों लोकों में शांति फैल गई।

धोखे की सचाई

सुभान नवरंगपुर का निवासी था। वह एक बार किसी काम से दूर के गाँव में गया। वहाँ पर एक दिन में अपना काम समाप्त कर लौटना चाहता था। मगर उसे कोई गाड़ी नहीं मिली। इसलिए वह यह सोचकर पैदल चल पड़ा कि रास्ते में कहीं कोई गाड़ी मिल जाएगी।

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक खाली घोड़ा गाड़ी दिखाई दी। एक बुजुर्ग पेड़ की छाया में सो रहा था। सुभान जब पेड़ के निकट पहुँचा, तब वह निराश हो गया। क्योंकि पेड़ के नीचे सोनेवाला व्यक्ति उसी के गाँव का श्यामलाल था। श्यामलाल न केवल कंजूस था, बल्कि अपनी हैसियत से नीचे के तबकेवालों को गाड़ी पर सवार होने नहीं देता था। अगर सवार होने देता तो उनसे दुगुना किराया वसूल किया करता था। इसलिए वह यह सोचकर आगे बढ़ गया कि उसे गाड़ी में जाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। मगर थोड़ी दूर जाने पर उसे कोई उपाय सूझा।

इसके थोड़ी देर बाद दूर पर घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। कोचवान चौंककर जाग पड़ा। उसने देखा कि उसका घोड़ा तो घास चर रहा है। इसलिए वह निश्चित हो फिर लेट गया। थोड़ी दूर पर फिर घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। इस बार श्यामलाल का घोड़ा भी हिनहिना उठा। इस बार फिर कोचवान उठ बैठा।

उसी वक़्त घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। सुभान दौड़ते पेड़ के समीप आ पहुँचा। घबराये हुए स्वर में बोला—"सेठजी! चोर और डाकू उधर जंगल की ओर से घोड़ों पर चले आ रहे हैं। गाड़ी में घोड़े को जोतकर जल्दी चलिए!"

वीणा गुप्त

पल भर में कोचवान ने घोड़े को गाड़ी में जोत दिया। सुभान ने श्यामलाल को जल्दी-जल्दी गाड़ी में ढकेल दिया और वह भी पीछे से गाड़ी पर सवार हो गया। चाबुक की मार खाकर घोड़ा हवा से बात करने लगा। उस वक़्त श्यामलाल को यह नहीं सूझा कि सुभान गाड़ी पर सवार हो गया है। इसलिए उसे मना करना है। उसके मन में चोरों का डर छाया हुआ था।

गाड़ी जब नवरंगपुर पहुँची, तब सुभान गाड़ी से उतर पड़ा। श्यामलाल ने गहरी साँस ली और अपने रुपयों की थैली ले जाकर तिजोरी में सुरक्षित रख दी।

कोचवान गाड़ी से घोड़े को खोल गाड़ी को साफ़ करने लगा, उस वक़्त उसे गाड़ी में एक छोटी-सी पोटली दिखाई दी। कोचवान ने सोचा कि सेठ साहब उस पोटली को ले जाना भूल गया है, उसने पोटली ले जाकर अपने मालिक के हाथ दे दी। सेठजी ने पोटली खोलकर देखा, उसमें कुछ छुट्टे पैसे और एक चिट था। चिट में यों लिखा हुआ था:

"सेठजी! आप कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए! मुझे अपने गाँव पहुँचने के लिए बड़ी कोशिश करने पर भी कोई गाड़ी नहीं मिली। इसलिए आप की गाड़ी में हमारे गाँव पहुँचने के लिए मैंने अपनी जानकारी की विद्या का प्रयोग किया। मैं कुत्तों का भूँकना, घोड़ों की हिनहिनाहट व टापों की ध्वनि करना जानता हूँ। इसी विद्या की मदद से मैंने आप को यह विश्वास दिलाया कि चोर और डाकू हमला करने जा रहे हैं। इस तरह आप को धोखा देकर आप की गाड़ी में मैं हमारे गाँव पहुँच गया। फिर भी मैं आप का यह ऋण रखना नहीं चाहता। आप साधारणतः लोगों से जो किराया वसूल करते हैं, उतना किराया चुकाने की शक्ति नहीं रखता। फिर भी न्यायपूर्वक जो किराया लगता है, उतने पैसे मैंने इस पोटली में रख दिये हैं। आप कृपया इन्हें स्वीकार कर लीजिए।"
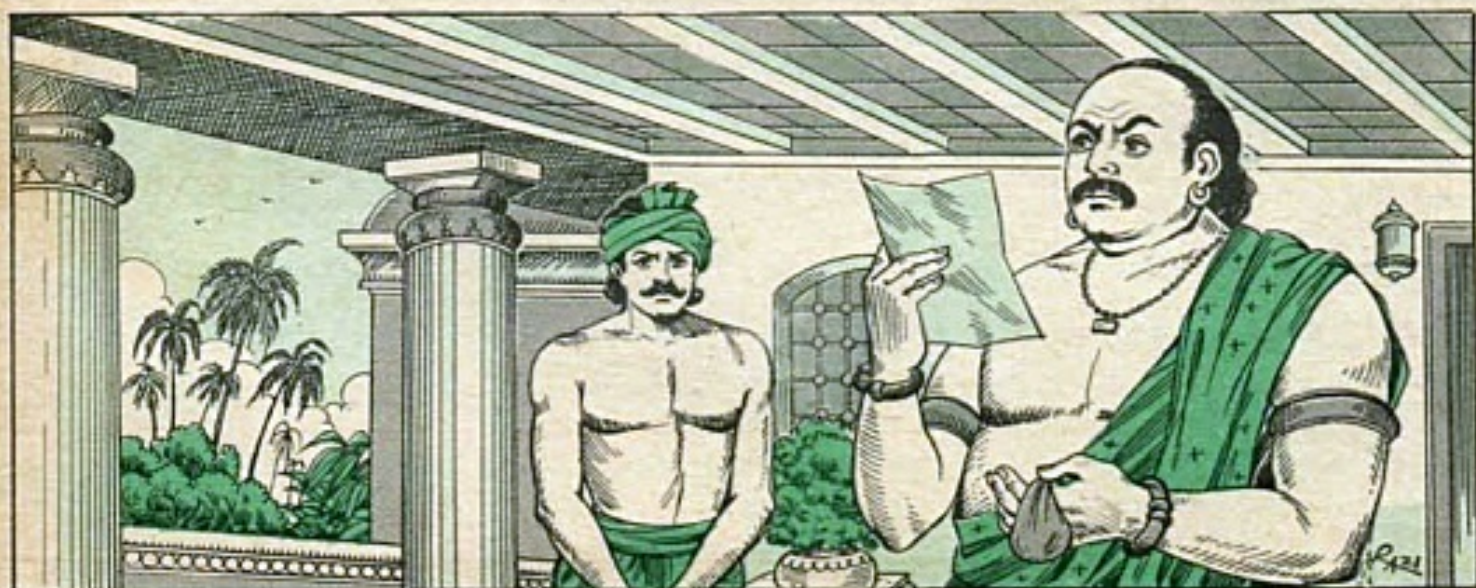
एक ही लक्ष्य

वररुचि के अनेक जातियों की स्त्रियों के द्वारा कई पुत्र पैदा हुए। उनमें एक निम्न जाति का था। वह एक दिन अपने बड़े भाई, जो ब्राह्मण वंश का था, के घर आया। श्राद्ध के दिन को छोड़ अन्य दिनों में उसे उस घर में प्रवेश नहीं मिलता था। उसने अपने ब्रह्मण भाई के नौकरों से पूछा कि उसका बड़ा भाई क्या कर रहा है?

एक नौकर ने बताया—"वे तो इस वक्त भगवान विष्णु की पूजा कर रहे हैं।" निम्न जाति का व्यक्ति बालू में गड्ढा खोदते बैठा रहा। थोड़ी देर बाद नौकर ने आकर बताया कि उसके मालिक शिवजी की पूजा में लगे हुए हैं। निम्न जाति का व्यक्ति एक और गड्ढा खोदने लगा। इसी प्रकार निम्न जाति के व्यक्ति को बराबर यह समाचार मिलता रहा कि उसका बड़ा भाई कभी दुर्गा की पूजा कर रहा है, कभी हनुमान की और कभी कार्तिकेय की पूजा में लगा हुआ है। आख़िर ब्राह्मण भाई पूजा समाप्त कर बाहर आया और बालू में कई गड्ढों को देख पूछा—"इतने सारे गड्ढे किसलिए?"

"मैंने पानी के वास्ते ये गड्ढे खोदे हैं।" छोटे भाई ने जवाब दिया।

"अरे मूर्ख! एक ही गड्ढा खोदते अब तक पानी निकल आता।" बड़े भाई ने डांटा।

"अबे मूर्ख! तुम इतने सारे देवताओं की पूजा न करके एक ही अपने आराध्य देवता की पूजा करते तो कभी के तर जाते।" छोटे भाई ने तपाक से जवाब दिया।
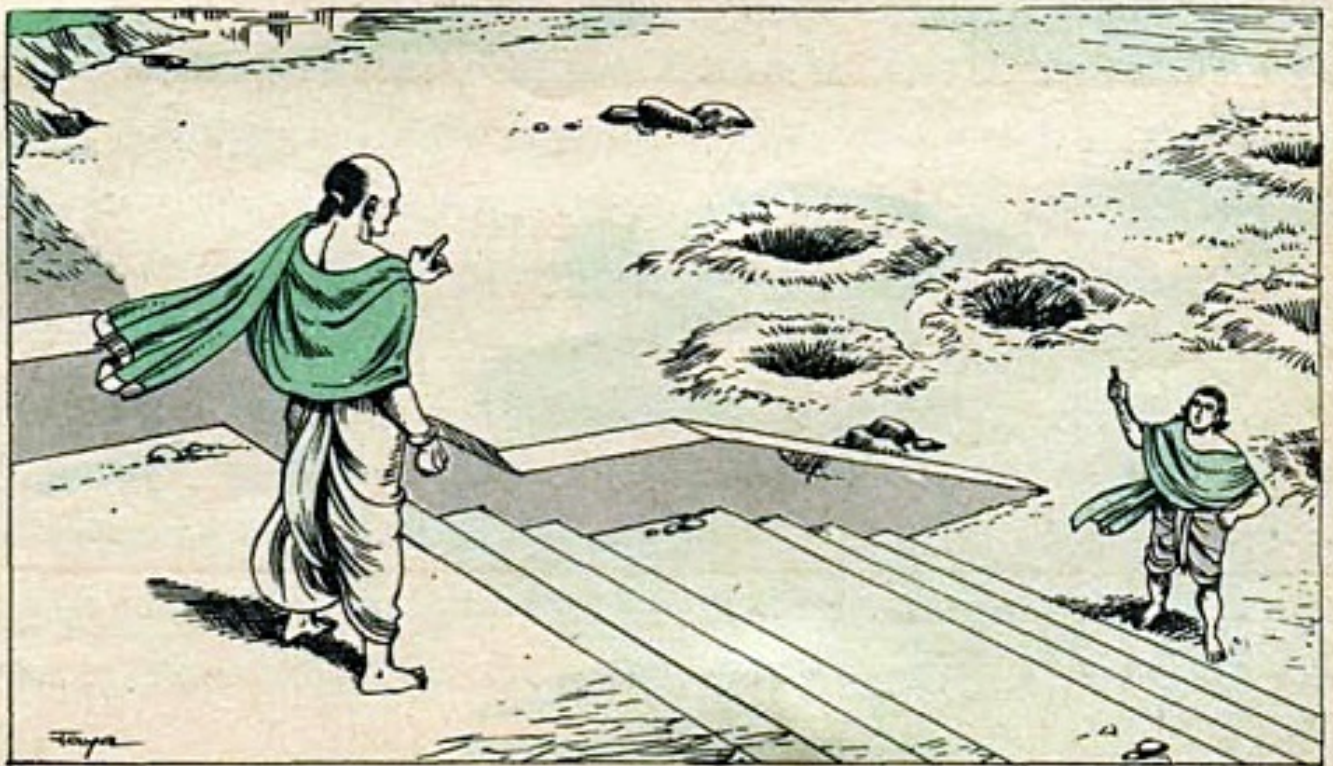
मनुष्य का कवच

चंदोवावाली चारपाई खरीदने के लिए जुम्मन को उसकी पत्नी कई दिनों से तंग करती रही। मगर उसकी क़ीमत ज्यादा होगी, इस ख्याल से जुम्मन खरीदने से संकोच करता रहा। उन्हीं दिनों में जमीन्दार की चंदोवावाली चारपाई नीलाम पर चढ़ गई। क्योंकि जमीन्दार का बेटा शहर को जाते सारी सामग्री बेच रहा था।

जुम्मन चंदोवावाली चारपाई को सस्ते में खरीदकर घर ले आया। चारपाई तो अच्छी हालत में थी, लेकिन उसमें बिठाया गया आईना जहाँ-तहाँ फूट गया था। उसकी जगह नया आइना लगवाने के ख्याल से जुम्मन ने पुराने आइने को निकाला तो उसके पीछे के एक गुप्त खाने में सोने के सिक्के दिखाई दिये।

जुम्मन की औरत ने समझाया—"ये सिक्के जमीन्दार के बेटे के हैं। दूसरों की संपत्ति जहर के बराबर है। इसलिए शहर में जाकर जमीन्दार के बेटे को दे आओ।"

जुम्मन सोने के सिक्के लेकर शहर पहुँचा। तब तक संध्या बीत चली थी। इसलिए जुम्मन ने सोचा कि वह रात किसी परिचित के घर बिताकर सुबह होते ही जमीन्दार के बेटे का पता लगाया जा सकता है।

यों विचार कर जुम्मन ने उस रात को शेषावतार नामक एक गृहस्थ के घर आश्रय लिया। शेषावतार का परिवार एक जमाने में संपन्न था, पर अब दरिद्र बन चुका था।

बातचीत के सिलसिले में जुम्मन को शेषावतार ने बताया कि उनका परिवार आर्थिक दृष्टि से कैसे पंगु बन गया है। साथ ही यह भी बताया कि उसका बीस साल का कमाऊ बेटा कैसे अकाल मृत्यु का शिकार हो चुका है। उसके इलाज में

मनमोहन गौतम

शेषावतार ने काफी रुपये खर्च किये। इस घटना के थोड़े दिन बाद उसके कपड़ों की दूकान आग में राख हो गई। कर्ज चुकाने के लिए उसने घर के सामान के साथ घर भी कैसे बेच डाला। यह सारी कहानी सुनाकर आगे बताया–"जुम्मन! कल सवेरे हमें यह मकान भी खाली करना होगा! अब मैं और मेरी पत्नी हमारे छोटे पुत्र पर आशा लगाये बैठे हैं।"

शेषावतार की हालत पर विचार करते जुम्मन को नींद न आई। आखिर उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि जमीन्दार के सोने के सिक्के शेषावतार को सौंपकर यह समाचार जमीन्दार के बेटे को सुनाना है। इतने में उसे नींद आ गई। मगर जल्द ही उसकी नींद खुल गई।

एक नक़ाबवाला आदमी शेषावतार की गर्दन पर छुरी टिकाकर शेषावतार को धमकी दे रहा था–"बताओ, तुमने अपना सारा धन कहाँ पर छिपाया है? वरना मैं तुम्हारे लड़के की गर्दन काट दूँगा।"

"भाई, मेरे बेटे की कोई हानि न करो। सचमुच मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है।" शेषावतार रोते हुए समझा रहा था। इसे देख जुम्मन बोला–"सुनो भाई, मेरी थैली में धन है। तुम उस लड़के को छोड़ दो। मेरा धन लेते जाओ।"

नक़ाबवाले आदमी ने जुम्मन के हाथ से पोटली ले ली। सोने के सिक्के देख वह खुश हुआ और अंधेरे में भाग खड़ा हुआ।

इस पर शेषावतार और उसकी पत्नी जुम्मन की तारीफ़ करते बोले–"भाई, तुम हमारे लिए भगवान बनकर आये, हमारे बेटे को बचाया। हम इसी पर भरोसा किये हुए हैं। न मालूम हम कैसे आप का यह ऋण चुका सकेंगे?"

"कौन जानता है, शायद मैंने ही आप का ऋण चुकाया हो! आप इसकी चिंता न कीजिए!" जुम्मन ने समझाया।

दूसरे दिन सवेरे जुम्मन जमीन्दार के बेटे की खोज में चल पड़ा। आखिर

उसका पता लगा पाया। मुश्किल की बात यह थी कि उस शहर में जमीन्दार के बेटे को कोई जानता न था। वह एक महल में नहीं, बल्कि शहर के किसी कोने में एक झोंपड़ी में रहा करता था।

जुम्मन ने सारी कहानी जमीन्दार के बेटे को सुनाकर कहा—"मैं तुम्हारा ऋण चुका दूंगा। तुम्हें बुरा न मानना होगा।" जुम्मन ने गिड़गिड़ाकर पूछा।

सारी बातें सुनकर जमीन्दार का बेटा बोला—"शहर में आकर मैंने भारी गलती की। गाँव में रहते वक़्त मुझे लगा कि शहर की ज़िंदगी बड़ी आरामदेह होगी। यह भी सोचा कि यहाँ पर खूब धन कमाया जा सकता है। लेकिन यहाँ पर सभी लोग दगेबाज हैं। मुझे एक बुज़ुर्ग ने व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया, बाद यह बताकर कि उसका दीवाला निकल चुका है, उसने मुझे इस झोंपड़ी में रखा और खुद एक महल बनवा लिया। मेरे जीने का कोई रास्ता न था। गाँव में आकर में तुम लोगों को अपना चेहरा भी दिखा न सकता था। इस वजह से चोरी करने को मैं बाध्य हो गया। कल रात को मैंने जो चोरी की, वह मेरा ही धन था। तुम जैसे भले आदमी गाँवों में छोड़ शहरों में नहीं होते। मैं भी अपने गाँव में लौट आऊँगा।"

इस पर जुम्मन ने मुस्कुराकर कहा—"अच्छे व बुरे लोग सब जगह होते हैं। क्या शहरों में शेषावतार जैसे सज्जन लोग नहीं हैं? मनुष्य के लिए तृप्ति नामक वस्तु कवच जैसी है। तृप्ति हो तो कहीं भी मनुष्य सुखी बन सकता है। उसके बिना वह तक़लीफ़ों का शिकार हो जाता है। आप की बाबत यही हुई है। शेषावतार जैसे लोग तात्कालिक रूप से भले ही कष्ट भोगे, पर उनके भी अच्छे दिन अवश्य आयेंगे।"

फिर क्या था, उस दिन शाम को जुम्मन जमीन्दार के बेटे को साथ ले अपने गाँव को लौट आया।

पवित्र जल

मोतीपुर गाँव के लिए पानी का अभाव था। गाँव भर में एक ही तालाब था, लेकिन वह बहुत ही पुराना था। उसका बहुत सा हिस्सा मिट्टी से भर गया था। गाँव पर शासन करनेवाला जमीन्दार कहीं पाँच गाँवों के उस पार था और वह मोतीपुर के विकास पर बिलकुल ध्यान न देता था। वह केवल लगान वसूल करने में ज्यादा दिलचस्पी लेता था।

उस हालत में गाँव के बुजुर्गों ने बैठक करके पानी की समस्या पर विचार-विमर्श किया। गाँव का जब विस्तार नहीं हुआ था, तब श्मशान वाटिका गाँव से लगकर थी। पर जब गाँव तेजी के साथ फैलने लगा, तब श्मशान को दूर हटाकर पुराने श्मशान और गाँव के बीच की जगह को बंजर के रूप में छोड़ दिया। वहाँ पर खोदने से एक अच्छा तालाब बन सकता था। लेकिन कुछ लोगों का यह विचार था कि वह तो श्मशान की भूमि है, श्मशान के माने प्रेतों की भूमि है, इसलिए वहाँ पर तालाब कैसे खोदा जाय?

आखिर फ़सलों की कटाई के वक़्त गाँववालों ने चन्दा इकट्ठा करके पुराने श्मशान में खुदाई शुरू की। मगर रुपयों के अभाव में यह काम बीच में ही रुक गया। इस बीच पुराना जमीन्दार मर गया और उसका बेटा जमीन्दार बना। वह उदार स्वभाव का था। इस कारण मोतीपुर के गाँववालों ने जाकर जब अपना दुखड़ा सुनाया तब उन्हें आर्थिक सहायता दी। गाँववालों ने नये जमीन्दार के नाम पर तालाब को हरि सागर पुकारना चाहा, मगर उसने अपने पिता के नाम राम सागर ही नामकरण करने का आदेश दिया।

गाँववालों ने बरसात के मौसम के पहले ही तालाब की खुदाई का काम शुरू किया, तालाब खोदने का काम पूरा भी हो गया। तब उसके तल में चारों कोनों में चार कुएँ खोदना प्रारंभ किया। तीन कुएँ तो खोदे गये, चौथा कुआँ जब खोदा जा रहा था, तब मिट्टी के ढेलों के गिरने से दो मजदूर उनके नीचे दबकर अकाल मृत्यु के शिकार हो गये।

गाँववालों को यह दुर्घटना एक अपशकुन सी लगी। कुछ लोगों ने कहा—"श्मशान में तालाब खोदने का यही फल है। अब साबित हो गया कि यह भूत-प्रेतों की भूमि है। इस तालाब का हमें उपयोग नहीं करना चाहिए।"

इसके बाद बरसात में रामसागर स्वच्छ जल से भर उठा। उसमें कमल और कुमुद खिल उठे, तालाब की शोभा देखते ही बनता था। मगर लोग उस ओर पटकते न थे। दो साल बीत गये, सारे तालाब में और मेंढों पर भी काई और घास उग आई।

जमीन्दार हरिशंकर के मित्रों में तारानाथ नामक एक जादूगर भी था। एक बार जमीन्दार हरिशंकर ने तारानाथ को राम सागर का सारा समाचार आदि से अंत तक कह सुनाया।

"दोस्त! चिंता न करो। गाँव के लोग जैसे अंध विश्वास रखते हैं, वैसे वे अद्भुतों पर भी विश्वास करते हैं। क्या
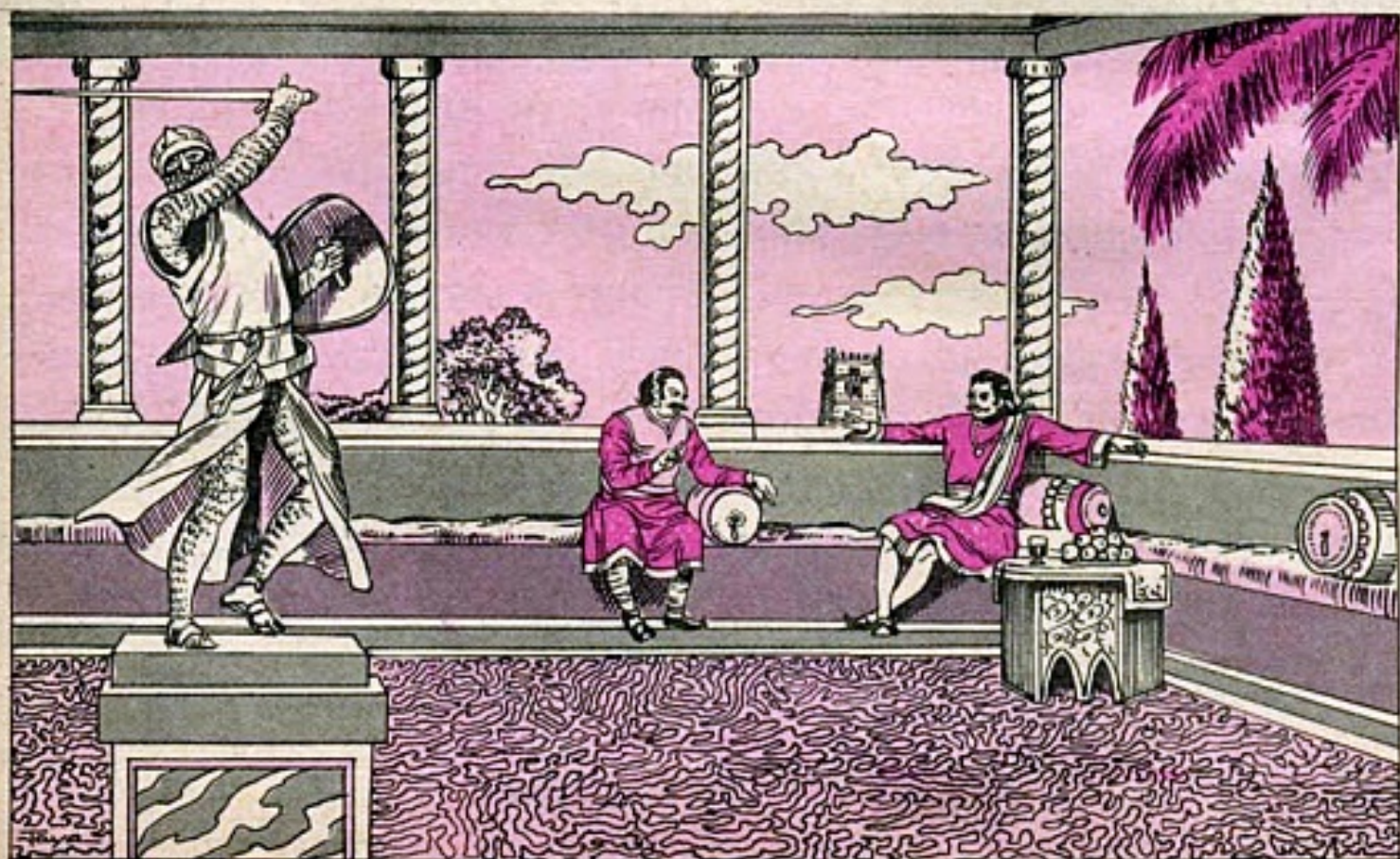
तालाब पर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं?" तारानाथ ने पूछा।

"सीढ़ियाँ ही क्यों, तालाब के पास हमने हाल ही में एक नया शिवाला भी बनवाया है! लेकिन मूर्ति की अभी तक प्रतिष्ठा नहीं हुई है!" जमीन्दार ने कहा।

"वाह! तब तो बहुत जल्द तालाब और मेंढ़ों पर की काई और घास साफ़ करवा दो। साथ ही यह घोषणा करवा दो कि कामरूप से तारानाथ नामक तंत्रवेत्ता आकर अमुक दिन मंदिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा करनेवाले हैं। यह भी प्रचार करा दो कि तंत्रवेत्ता राम सागर में रहनेवाले पिशाचों को भगाकर अगली पूर्णिमा तक तालाब के जल को अमृत जैसे बनाने जा रहे हैं।" तारानाथ ने यों अपना उपाय समझाया।

मूर्ति के प्रतिष्ठापन के सारे प्रबंध पूरे किये गये। तारानाथ तांत्रिक का वेष धरकर मोतीपुर आया और एक दिन पूर्व ही मंदिर में डेरा डाला। जमीन्दार के नौकर उनकी सेवा में लग गये। पूर्णिमा के दिन जमीन्दार के पुरोहित ने आकर शास्त्र विधि से मंदिर में मूर्ति का प्रतिष्ठापन किया। उस उत्सव को देखने लोग भारी संख्या में आये। लोगों को आकृष्ट करने के लिए वाद्य संगीत आदि का आयोजन किया गया। तालाब का पानी अब एकदम साफ़ था। पर जनता
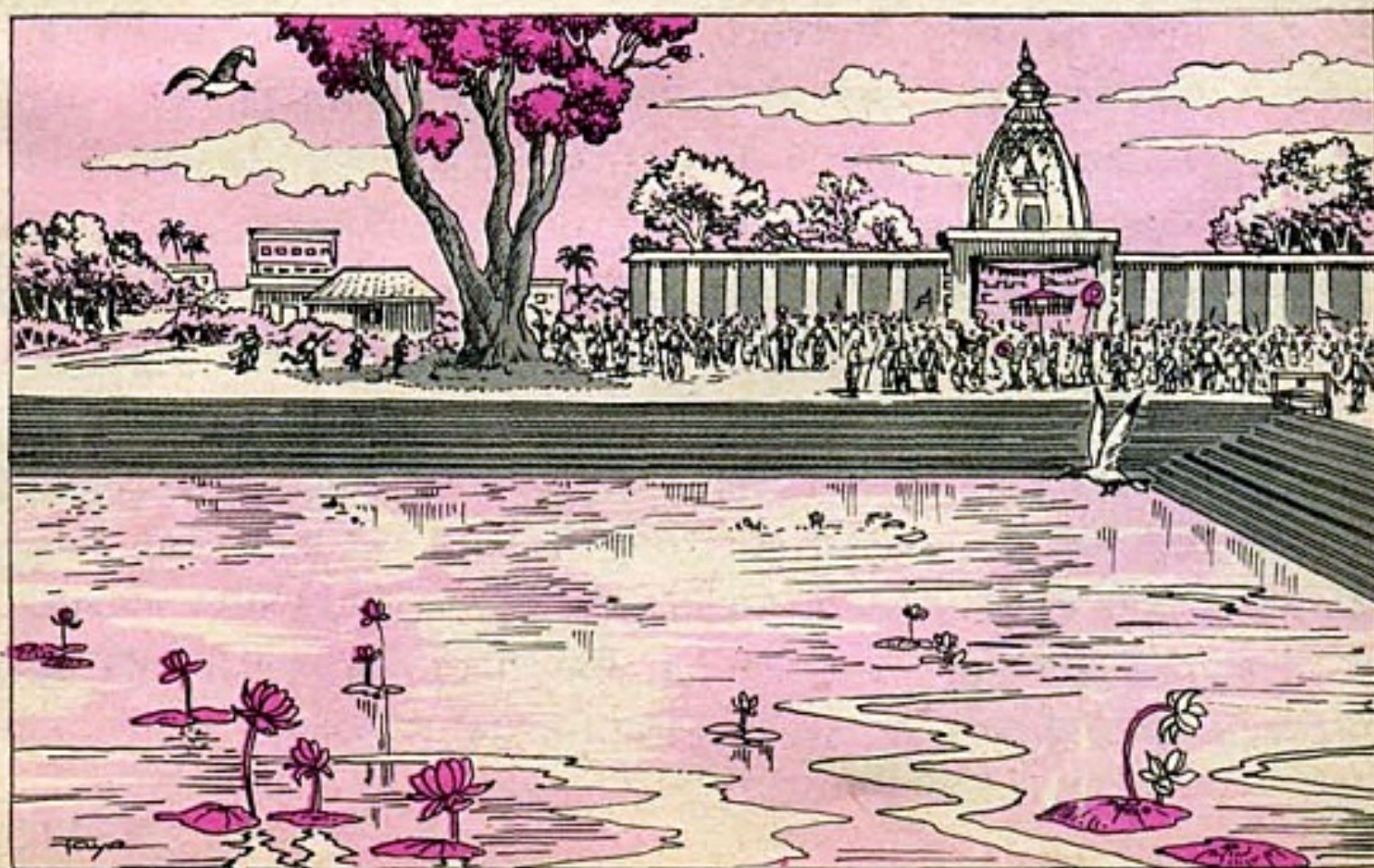
का डर अभी तक बना रहा । तारानाथ लाल वस्त्र और हाथ भर लंबी दाढ़ी के साथ मंदिर से तालाब के किनारे जनता के समीप आ पहुँचा । उसने लोगों को समझाया–"दोस्तो! आप लोगों ने जो कुछ समझा, वह सही है । यह तो निश्चय ही भूतों का निवास स्थान ही है । मैंने योग दृष्टि से यह बात जान ली है । मगर इस मंदिर में भूतनाथ शिवजी के प्रतिष्ठापन के साथ सारे भूत भाग गये हैं । आज तक भूतों की वजह यह जल जो अपवित्र बना हुआ था, उसे मैं पल भर में अमृत जैसे बना दूँगा । इसके बाद शिवजी के अधीन रहनेवाले इस जल का उपयोग आप लोग अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं । लो, देखिये तो!"

यों कहकर तारानाथ मंदिर के अंदर गया । एक नारियल की अंठी से बनी कलछी ले आया । उसके भीतर लोहे की एक छड़ी घुसेड़ दी । तब कुछ ग्रामवासियों को साथ ले जल के समीप गया । कलछी में जल भरकर सबके हाथों में थोड़ा-थोड़ा पानी डाल दिया, तब पूछा–"अब आप लोग बताइयें, पानी का स्वाद कैसा है?', लोगों ने एक स्वर में बताया कि पानी का कोई स्वाद नहीं है ।

इसके बाद तारानाथ ने संस्कृत में शिवजी के प्रति स्तोत्र ऊँची आवाज़ में पढ़ा । फिर से कलछी में जल भरकर सबके हाथों में थोड़ा-थोड़ा डालकर पूछा–"अब बताइये, पानी का स्वाद और गंध कैसी है?" सबने पानी की गंध देखी, तब भक्तिपूर्वक आँखों से लगाकर पानी पी डाला ।

तारानाथ के पूछने पर सब ने इस बार एक स्वर में बताया–"ओह! अपूर्व गंध है । अमृत जैसा है ।" इस पर तारानाथ के आदेश पर सब लोग पिशाचों का भय छोड़ तालाब में कूद पड़े, तैरकर स्नान किया । उस वक़्त से राम सागर गाँववालों के लिए पवित्र बन गया । गाँव के लिए अब पानी का अभाव न रहा ।

उस दिन रात को जमीन्दार ने तारानाथ से पूछा–"दोस्त! तुमने बड़ा ही अद्‌भुत कार्य किया! लेकिन यह कैसे संभव हुआ?"

तारानाथ अपनी संदूक़ से नारियल की कलछी निकालकर बोला–"इसकी डंटल देखिये! वास्तव में यह एक नली है। इसके भीतर खोखलापन है। नारियल की अंठी के भीतर घुसेड़ा गया इसका छोर सदा के लिए बंद रहता है। मेरे हाथ में नली का जो दूसरा छोर है, उसमें हवा जाने से रोकने के लिए रबर का काग भर दिया गया है। उस पर रंग लगाकर लोहे जैसे दीखने लायक़ बनाया है। नली के हिस्से को अंठी के मध्य भाग में देखिए। उसके निछले भाग में एक छेद है। वह सामने बैठे हुए लोगों को दिखाई नहीं देता। उसके बाहर जहाँ मैंने उसे अपने हाथ से पकड़ लिया है, वहाँ पर एक दूसरा छेद है। उसे मैं अपने अंगूठे से ढककर रख देता हूँ। इंद्रजाल करने के पूर्व इस नली में बिठाये गये रबर के काग को निकालकर नली के दोनों छेदों को उंगलियों से बंदकर नली में मैंने पानी भर दिया है। उस पानी में मैंने चंदन, कस्तूरी और शहद को मिलाया है। तब रबर का काग बिठा दिया है। इसके बाद छेदों पर से बायें हाथ की उंगलियाँ निकालकर नली को पकड़ने के स्थान पर जो छेद है, उसे दायें अंगूठे से ढक दिया है। इसी क्रम से कलछी को पकड़कर मंदिर से बाहर आया और सब लोगों को यह अद्‌भुत दिखाया है। कलछी को मैंने पहली बार जब पानी में डुबो दिया, तब मेरे हाथ का दायाँ अंगूठा छेद पर ही था। इसलिए उसका पानी साधारण पानी जैसे बिना गंध का रहा। लेकिन दूसरी बार जब कलछी को पानी में डुबोया, तब छेद पर से दायें अंगूठे को हटाया। इस कारण अंठी के छेद से नली का गंधवाला पानी अंठी के भीतर प्रवहित हुआ। उसमें शहद भी था, इस कारण उस पानी में गंध और स्वाद भी आ गया।"
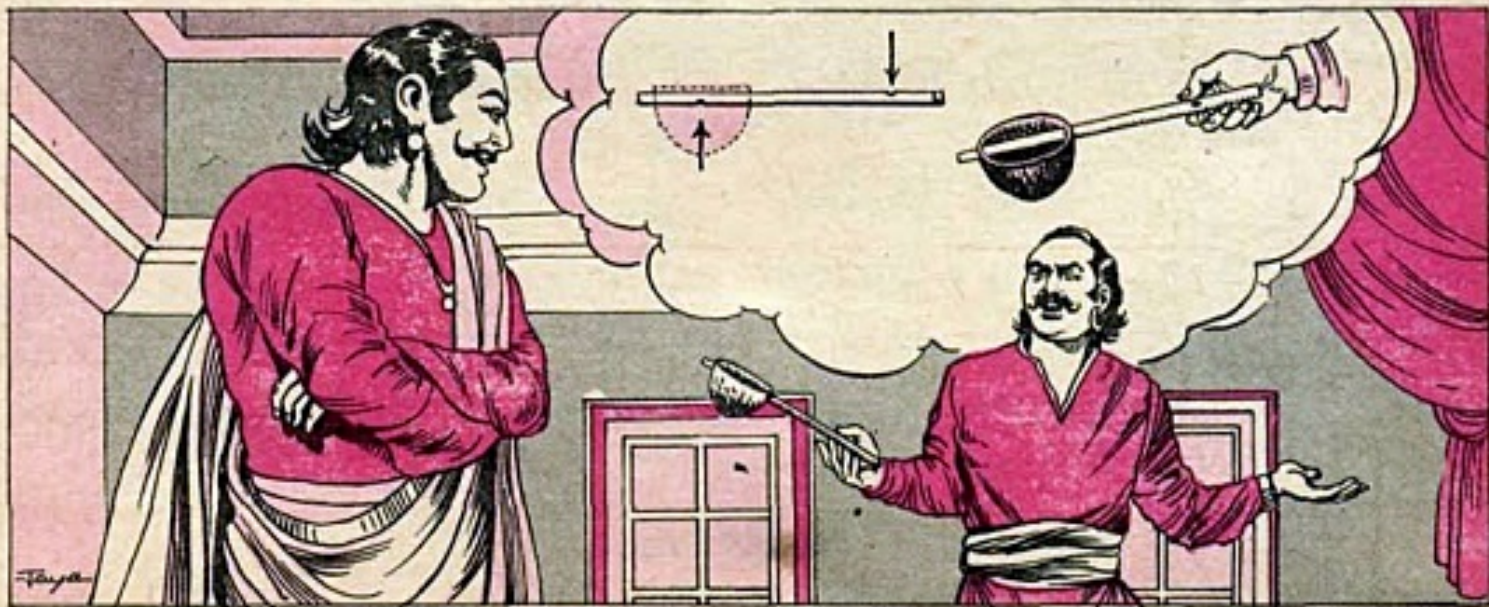
सब से बड़ी विद्या

"राज्य की राजधानी में विद्याओं के प्रदर्शन होने जा रहे हैं। सब कोई अपनी विद्या का प्रदर्शन कर सकते हैं। किसी भी विद्या में कोई भी व्यक्ति अपनी कुशलता का प्रदर्शन करे तो राजा उन्हें पुरस्कार और वार्षिक शुल्क प्रदान करनेवाले हैं।" यह ढिंढोरा सुनकर उत्साहपूर्वक कई लोग अपने अपने गाँव से राजधानी की ओर चल पड़े।

रामशास्त्री एक पंडित था। कथावाचक भी था। पुराण सुनाने में प्रवीण था। इसलिए वह अपनी इस विद्या का प्रदर्शन करने चल पड़ा। उसके साथ धनुर्विद्या में प्रवीण सुधन्वु भी निकल पड़ा।

दोनों जब गाँव से निकले तब उनके सामने से बीरमदास आ गुजरा। बीरमदास लाठी चलाने में बड़ा दक्ष था। इस कारण दोनों ने उसे समझाया—"बीरम! सुनो, तुम्हारी विद्या देख शायद तुम्हें राजा कोई पुरस्कार दे, क्या पता? अगर तुम्हें कोई पुरस्कार नहीं मिला तो विद्याओं के प्रदर्शन देख अपना मनोरंजन तो कर सकते हो! दो के बजाय तीन आदमी के रहने से यात्रा आराम से कट सकती है। तुम भी हमारे साथ चलो।" ये बातें सुन बीरमदास भी उनके साथ हो लिया।

एक एक जून एक एक आदमी सबकी रसोई बनाता, खा-पीकर वे हँसते-गाते मजे से यात्रा करते। एक दिन वे तीनों जब जंगल के रास्ते से यात्रा कर रहे थे, तब उनमें यह बहस चल पड़ी कि कौन सी विद्या सबसे बड़ी है?

इस पर सुधन्वु ने कहा—"निस्संदेह सबसे धनुर्विद्या ही बड़ी है। मैं सौ गज की दूरी पर स्थित दुश्मन को या चिड़िया को भी निशाना देख मार गिरा सकता हूँ। अगर

श्यामसुंदर पंत

मुझे जंगल में अकेले छोड़ भी दिया जाय तो मैं शिकार खेलकर अपना पेट पाल सकता हूँ। इस कारण सबसे धनुर्विद्या ही बड़ी है।"

पर इस बात को रामशास्त्री ने नहीं माना, उसने कहा–"तुम्हारी विद्या भले ही जंगल में काम दे सकती हो, मगर मनुष्यों के बीच किसी काम की नहीं है। साधारणतया सामाजिक जीवन में मनुष्यों को उल्लास प्रदान कर उनके कष्टों को भुला देनेवाली और 'इह' तथा 'पर' को प्राप्त करानेवाली विद्या मेरी है। आज तक मैंने ऐसे आदमी को नहीं देखा है, जो मेरे पुराण को सुनकर खुश न हुआ हो! सब को आनंद प्रदान करानेवाली विद्या ही बड़ी है।"

बीरम ने बीच-बचाव करने के ख़्याल से कहा–"तुम दोनों झगड़ते क्यों हो? सभी विद्याएँ अपनी अपनी जगह बड़ी होती हैं। कोई भी विद्या समय और संदर्भ के अनुरूप शोभा देती है। यह सोचना मूर्खता है कि एक विद्या बड़ी है और दूसरी विद्या किसी काम की नहीं है।"

इस पर बाक़ी दोनों ने एक स्वर में पूछा–"तो तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारी विद्या भी हमारी विद्याओं के बराबर है। हम बाद को फ़ैसला करेंगे कि हमारी विद्याओं में कौन बड़ी विद्या है? मगर यह बात साफ़ है कि तुम्हारी विद्या हमारी विद्याओं के सामने किसी काम की नहीं है।"

"मैं तुम लोगों के साथ तर्क करना नहीं चाहता। अब हम रसोई बनाने की तैयारी करेंगे। लगता है कि नजदीक में ही कोई तालाब है।" बीरम ने कहा।

उस जून को रसोई बनाने का काम बीरम का था। इसलिए वह रसोई बनाने में लग गया। बाक़ी दोनों जंगल देखने चल पड़े। वे जंगली की शोभा निरखते आगे बढ़ गये।

थोड़ी देर बांद रामशास्त्री के आर्तनाद बीरम को सुनाई दिये। बीरम ने उठ खड़े होकर देखा, दूर पर रामशात्री और सुधन्वु को चार डाकू घेरे हुए हैं।

रामशास्त्री का चमत्कारपूर्ण वार्तालाप शायद डाकुओं पर प्रभाव नहीं डाल पाया। डाकू बहुत ही निकट आ गये थे, इस कारण सुधन्वु की धनुर्विद्या भी निरुपयोगी साबित हुई।

उस वक़्त बीरम लाठी लेकर दौड़ता गया और डाकुओं पर टूट पड़ा। डाकू बाक़ी दोनों को छोड़ बीरम पर हमला कर बैठे। मगर बीरम लाठी चलाने में अद्भुत कौशल रखता था। लाठी की मार खाकर चारों डाकू जंगल में भाग गये।

रामशास्त्री और सुधन्वु लजाते हुए बोले—"बीरम! तुम वक़्त पर न पहुंचते तो डाकुओं ने हमारा अंत कर दिया होता। हमने अज्ञानवश अपनी विद्याओं को श्रेष्ठ माना। हमने अहंकार के वशीभूत हो कुछ बक दिया। हमें क्षमा कर दो। वाकई तुम्हारी विद्या ही हमारी विद्याओं से बड़ी है।"

पर बीरम ने शांतिपूर्वक कहा—"ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने पहले ही बताया है कि कोई भी विद्या समय और संदर्भ पर अपनी महत्ता रखती है। हमें अपनी विद्याओं पर गर्व नहीं करना चाहिए। अन्य विद्याओं को कभी कम नहीं मानना चाहिए।"

इसके बाद वे तीनों राजधानी में गये। अपनी अपनी विद्याओं का प्रदर्शन करके राजा से पुरस्कार प्राप्त कर लौट आये।
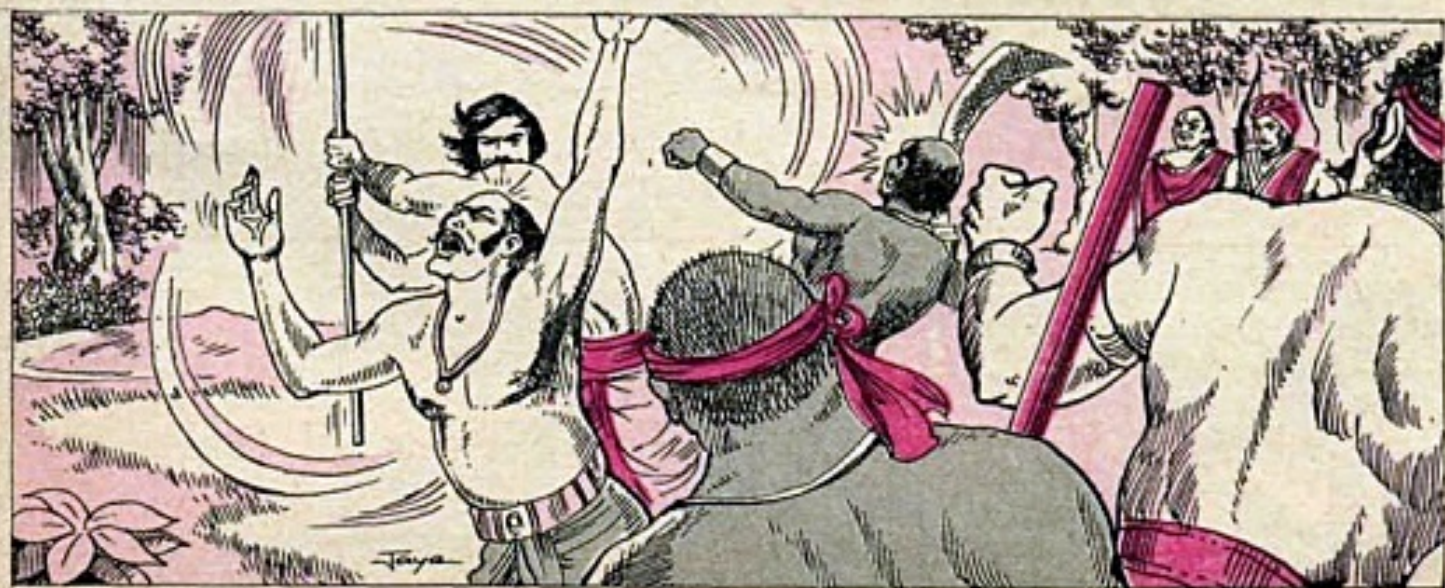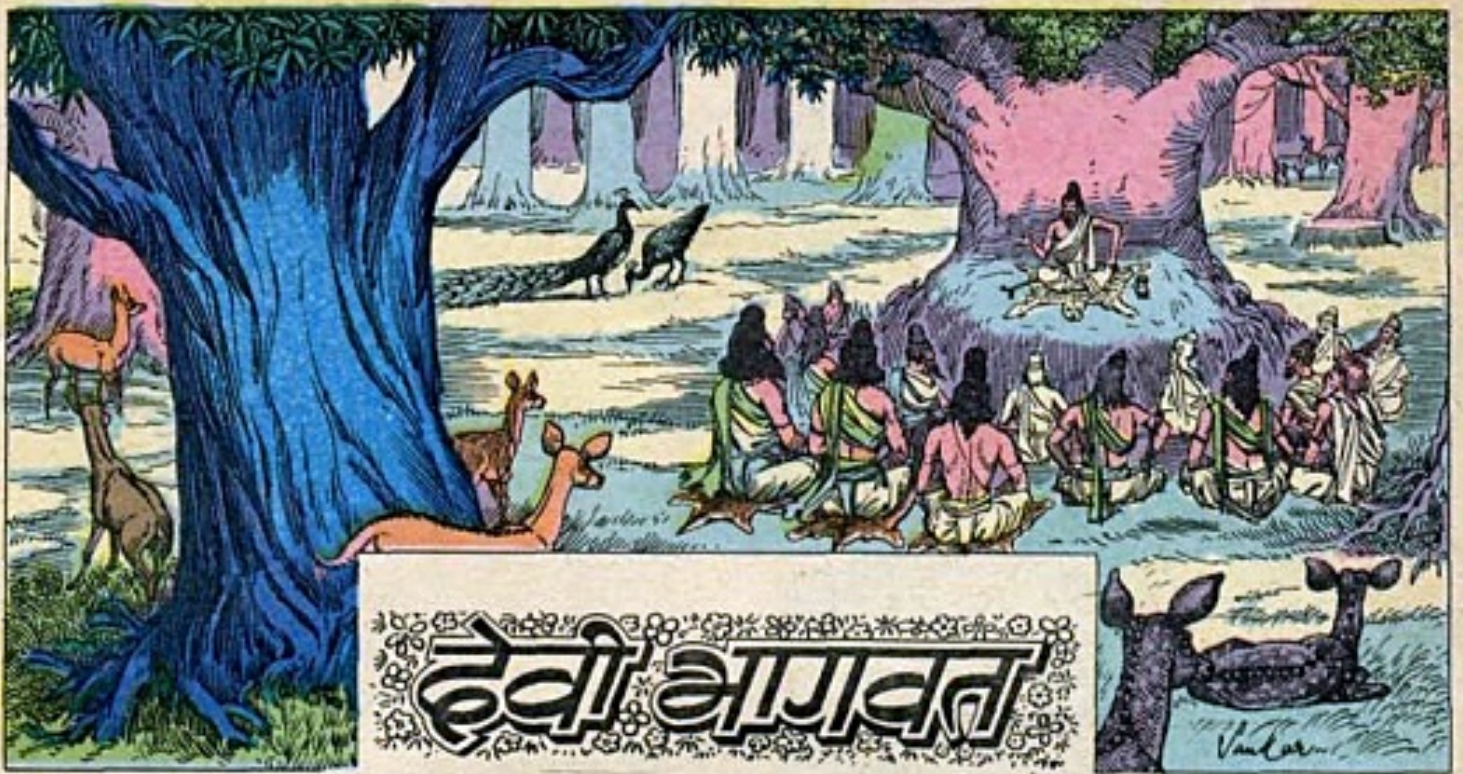
नैमिशारण्य में निवास करनेवाले मुनियों को सूत मुनि ने व्यास महर्षि के द्वारा सुने अनेक पुराण सुनाये। किसी संदर्भ में सूत ने शौनक आदि मुनियों के सामने देवी भागवत नामक पुराण का उल्लेख किया था। एक दिन शौनक ने सूत को यह बात याद दिलाई और वही भागवत सुनाने का अनुरोध किया। सूत ने उन मुनियों को देवी भागवत पुराण कह सुनाया:

सूत ने सर्व प्रथम आदि शक्ति के बारे में यों कहा: देवी एक महान शक्ति है। वही विद्या है, समस्त लोक उनके आश्रय में हैं। सृष्टि, स्थिति और लय का कारणभूत वास्तव में आदि शक्ति ही है। उनकी प्रेरणा से त्रिमूर्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। ब्रह्मा विष्णु की नाभि से उत्पन्न हुए हैं। विष्णु का आधार आदि शेष हैं। उस जल का आधार महा शक्ति लोक माता है। ऐसी देवी से संबंधित कथा ही देवी भागवत है।"

सूत मुनि के मुंह से देवी भागवत की कथा सुनने का कुतूहल रखनेवाले मुनियों की तरफ़ से शौनक ने सूत मुनि से पूछा—"एक समय ब्रह्मा ने हमें एक चक्र प्रदान किया और कहा था कि उसकी नेमि जिस प्रदेश में टूट जाएगी, वह प्रदेश अत्यंत पवित्र है। वहाँ पर कलि का प्रवेश न होगा। उस चक्र की नेमि या धुरी यहीं पर टूट गई थी। इसलिए इस प्रदेश का नाम नैमिश पड़ा। हम लोग यहीं पर

१. सूत और शौनक आदि मुनि

गुरुदेव हैं। वे अपने पुत्र शुक को यह देवी भागवत सुना रहे थे, उस समय मैंने अत्यंत भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक उसे हृदयंगम कर लिया। बुजुर्ग कहा करते हैं न-- "दामाद के साथ खाओ, पुत्र के साथ पढ़ो।' इसी प्रकार यह देवी भागवत सुनकर शुकमुनि तर गये। वास्तव में जिन लोगों ने यह पुराण सुना है, वे कष्टों से दूर हो जाते हैं।"

इस पर मुनियों ने पूछा–"शुक मुनि व्यास महर्षि के कैसे पुत्र हुए? कहा जाता है कि उनका जन्म अरणि में हुआ है।" इस पर सूत ने मुनियों को शुक का जन्म-वृत्तांत यों सुनाया :

रह गये। पुनः कृत युग के आगमन तक यहीं रहकर कलि के भय से मुक्त रहेंगे। यहाँ पर हमें पुण्य गोष्ठी के अतिरिक्त अन्य काम नहीं हैं। इसलिए आप हमें पुण्यप्रद देवी भागवत पुराण सुनाइये।"

इसके बाद सूत मुनि ने यों कहा :

"महामुनि व्यास ने मुझे देवी भागवत सुनाया, उसी रूप में मैं आप लोगों को वह पुराण सुनाता हूँ। अब तक सत्ताईस द्वापर बीत गये हैं और अट्ठाईसवाँ द्वापर चल रहा है। प्रत्येक द्वापर में एक व्यास का जन्म हुआ है। वेदों का विभाजन करके, पुराणों की रचना करनेवाले सात्यवतेय नामक व्यास (सत्यवती का पुत्र) मेरे

एक समय व्यास महर्षि सरस्वती नदी के तट पर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ पक्षी दंपतियों के रूप में जीवन बिताते हुए बच्चे दे रहे हैं और उनके मुंह में आहार देकर उनके खाते देख वे परमानंदित हो रहे हैं। इसे देख व्यास ने सोचा कि उन्हें भी संतान पैदा हो जाय तो क्या ही अच्छा हो! शादी करने पर पत्नी के साथ सुख भोग सकते हैं। पुत्रों का जन्म दे सकते हैं। पुत्र बड़े हो विवाह करे तो प्यारी बहू को देख प्रसन्न हो सकते हैं। पुत्रों के होने से कितने ही लाभ हैं! वे हमारी वृद्धावस्था

में श्रद्धा के साथ हमारी सेवा करेंगे। धन कमा कर ला देंगे। हमारे मरने पर सिर के नीचे आग देकर हमें उत्तम लोकों की प्राप्ति के हेतु पिंड प्रदान वगैरह करते हैं। इसलिए मानव के लिए पुत्रों से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

यों विचार कर व्यास मुनि पुत्र पाने के विचार से तपस्या करने कांचनाद्रि पहुँचे और सोचने लगे कि किस देवता की आराधना करने से उनकी इच्छा की पूर्ति जल्दी हो सकती है। उस समय वहाँ पर नारद पहुँचे। उन्हें देखते ही व्यास ने प्रणाम करके पूछा—"भगवान! आप उचित समय पर आ गये। संभवतः मेरी कामना की पूर्ति करने के लिए ही पधारे होंगे।"

इस पर नारद ने कहा—"आप सर्वज्ञ हैं। आप के लिए किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता ही क्या है? फिर भी आप की कोई कामना हो तो बता दीजिए।"

"सुना है कि पुत्र विहीन व्यक्ति को परलोक प्राप्त नहीं होता। महर्षि! बताइये, किस देवता की प्रार्थना करने पर वे मुझे पुत्र प्रदान करेंगे?" व्यास ने पूछा।

इस पर नारद ने यों समझाया—"एक समय मेरे पिता ब्रह्मा के मन में भी यही संदेह पैदा हुआ। वे विष्णु लोक में पहुँचे।

विष्णु को देख पूछा—"मैं आप ही को सर्वोत्तम मानता हूँ। आप से भी कोई महान व्यक्ति हो तो बता दीजिए।"

विष्णु ने कहा था—"लोग सोचा करते हैं कि आप सृष्टिकर्ता हैं, मैं स्थितिकारक हूँ और शिवजी लयकारक हैं। लेकिन यह तो भारी भूल है। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि तेजोप्रधान 'आदि शक्ति' ही सृष्टि करती हैं। हम अगर सृष्टि, स्थिति और लयकारक हैं तो इसका कारण है—आप को रज, मुझे सत्व और शिवजी को तमस सहायकारी हो रहे हैं। वरना हमारा मूल्य ही क्या है? यदि मैं शेषतल्प पर शयन करता हूँ, और घमण्डी राक्षसों

का वध करता हूँ तो यह सब उस शक्ति की कृपा के कारण ही है न? क्या बहुत समय पूर्व मधु और कैटभ नामक दानवों के साथ पाँच हज़ार वर्षों तक लड़कर अंत में उसी शक्ति की सहायता से ही मैंने विजय नहीं पाई? मैं कभी अपने को स्वतंत्र व्यक्ति नहीं मानता। एक बार धनुष की डोरी के द्वारा मेरा सर कट गया तो आप ने देव शिल्पी के हाथ एक घोड़े का सिर चिपकवा दिया था, इस प्रकार मैं क्या हयग्रीव नहीं बना? इसलिए मैं शक्ति के अधीन हूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि समस्त लोकों में भी शक्ति से बढ़कर कोई चीज़ है!"

यों समझाकर नारद ने व्यास मुनि से कहा—"इसलिए आप आदि शक्ति की आराधना करेंगे तो आप की इच्छा की पूर्ति होगी।"

इस पर व्यास महर्षि ने लोक माता के प्रति तपस्या की।

इस पर मुनियों ने सूत से पूछा—"विष्णु का सर कैसे कट गया? उनके धड़ पर घोड़े का सर कैसे चिपकाया गया? इसे विश्वस्त रूप में सुनाइये।"

हयग्रीवावतार

प्राचीन काल में विष्णु ने राक्षसों के साथ दस हज़ार वर्ष तक युद्ध किया, आख़िर थककर चढ़ायी गयी प्रत्यंचा की डोरी पर चिबुक टिकाकर सोने लगे। उस समय देवताओं ने यज्ञ करने का संकल्प किया और उनकी खोज में आ पहुँचे। विष्णु को सोते देख वे पशोपेश में पड़ गये कि आख़िर क्या किया जाय? इस पर शिवजी ने ब्रह्मा से कहा—"आप एक कीड़े की सृष्टि करके उसके द्वारा विष्णु के धनुष की प्रत्यंचा को कटवा दीजिए। प्रत्यंचा के कटते ही धनुष का छोर ऊपर उठेगा। तब विष्णु जाग पड़ेंगे। इस प्रकार यज्ञ संपन्न हो सकता है।"

इस पर ब्रह्मा ने कीड़े की सृष्टि करके प्रत्यंचा की डोरी को काटने का आदेश दिया।

तब कीड़ा बोला–"महात्मा! मैं यह काम कैसे करूँ? यह तो महान पाप है न? माता और बच्चों को अलग करना, पति-पत्नी में विरह पैदा करना, निद्रा भंग करना ये सब ब्रह्महत्या जैसे महान पाप हैं। क्या आप मुझे यह पाप करने का आदेश देते हैं?"

"तुम चिंता न करो! यज्ञ में अग्नि की आहुति न करनेवाले सारे पदार्थ मैं तुम्हें दूंगा।" ब्रह्मा ने कीड़े को समझाया।

इस पर कीड़े ने प्रसन्न होकर प्रत्यंचा की डोरी काट दी। उस वक़्त भारी आवाज़ हुई। इस पर धरती कांप उठी। प्रत्यंचा का छोर तन गया जिससे विष्णु का सर कटकर ऊपर उड़ गया। इसे देख सारे देवता घबरा गये। उनकी समझ में न आया कि क्या करे? तब से सब विलाप करने लगे–"भगवान! आप तो सर्वेश्वर हैं। समस्त लोकों का पालन करनेवाले हैं। आप का यह हाल कैसे हो गया है? सभी राक्षस जो कार्य नहीं कर पाये, यह काम किसने किया है? आप तो माया से भी अतीत रहते हैं! क्या माया का इस प्रकार करना संभव है?"

इस पर देवगुरु बृहस्पति ने उन्हें समझाते हुए कहा–"रोते बैठे रहने से काम कैसे चलेगा? जो हुआ सो हो गया। इसका कोई उपाय सोचिये।"

तब इंद्र ने कहा–"समस्त देवताओं के देखते देखते भगवान विष्णु का सर कटकर उड़ गया है। ऐसी हालत में हमारे प्रयत्नों के द्वारा क्या हो सकता है? भगवान की कृपा से ही कुछ संभव है!"

इस पर ब्रह्मा ने देवताओं को समझाया–"सब कार्यों के लिए जगदीश्वरी का अनुग्रह चाहिए। वे ही सृष्टि, स्थिति और लयकारिणी हैं। इसलिए आप सब उस आदि शक्ति की प्रार्थना कीजिए।"

देवताओं ने आदि शक्ति की प्रार्थना की। उन पर कृपा करके देवी प्रत्यक्ष हो गई।

देवी के दर्शन कर देवताओं ने पूछा– "माता! विष्णु भगवान का यह हाल क्यों हो गया है? उनका सर क्या हो गया है?"

देवी ने उनको समझाया–"बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। एक दिन विष्णु ने शयनागार में लक्ष्मी को देख हँस दिया। तब लक्ष्मी घबरा गईं। विष्णु भगवान उनका चेहरा देख क्यों हँस पड़े? क्या उनका मुंह ऐसा भद्दा है? या उससे भी अधिक रूपवती नारी को देख वे उस पर मोहित हो गये हैं? यों विचार कर लक्ष्मी ने सोचा कि सौत के झगड़े मोल लेने की अपेक्षा पति का मर जाना कहीं उत्तम है? यों सोचकर लक्ष्मी ने विष्णु को शाप दिया कि उनके पति का सिर कटकर समुद्र में गिर जाय। उसी शाप के कारण विष्णु का यह हाल हो गया है। साथ ही हयग्रीव नामक राक्षस ने मेरे प्रति एक हज़ार वर्ष पर्यंत तपस्या की। मैंने प्रत्यक्ष होकर उससे वर माँगने को कहा। तब उसने पूछा कि किसी के भी द्वारा उसकी मौत न हो। मैंने समझाया कि जो भी प्राणी जन्म लेता है, उसे मृत्यु अनिवार्य है। इसलिए मैंने दूसरा वर माँगने को कहा। इसलिए उसने यह वर माँगा कि वह हयग्रीव है; अतः हयग्रीव के द्वारा ही उसकी मृत्यु हो। मैंने यह वर उसे दे दिया। वह इस वक़्त समस्त लोकों को सता रहा है। इन तीनों लोकों में उसे मारने की शक्ति रखनेवाला कोई नहीं है। इसलिए तुम लोग एक घोड़े का सर लाकर विष्णु के धड़ से लगाकर हयग्रीव की सृष्टि कर दो। ऐसा करने पर ये विष्णु हयग्रीव उस राक्षस हयग्रीव का वध कर बैठेंगे और तुम लोगों की कामना की पूर्ति भी होगी।"

यों समझाकर आदि शक्ति अदृश्य हो गई। तब देवताओं ने देवशिल्पी को बुलवाकर आदेश दिया कि घोड़े का सर लाकर विष्णु के धड़ से चिपका दे। देवशिल्पी ने ऐसा ही किया। फिर क्या

था, विष्णु ने हयग्रीव के रूप में हयग्रीव राक्षस का वध करके लोकों को आनंद प्रदान किया। इसके उपरांत मुनियों ने सूत से प्रार्थना की कि उन्हें मधु और कैटभ का वृत्तांत सुनावे। तब सूत ने उन राक्षसों का वृत्तांत यों सुनाया :

क्षीर सागर में शेष शय्या पर जब विष्णु सो रहे थे तब उनके कानों से दो राक्षस पैदा हुए। वे पानी में तैरते अपने जन्म के कारण पर आश्चर्य चकित हुए। तब कैटभ ने मधु से कहा—"इस महा समुद्र और हमारे लिए भी कोई आधार ज़रूर होगा।"

उसके मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि आकाश से यह वाणी सुनाई दी।

मधु और कैटभ उस वाणी का जाप करने लगे। तभी लगा कि आसमान में कोई बिजली कौंध गई हो! राक्षसों ने उसे देख सोचा कि वह आदि शक्ति का तेज है। तब उन्हें जो ध्वनि सुनाई दी गई उसी को मंत्र मानकर एक हज़ार वर्ष पर्यंत तप किया। उस तपस्या पर प्रसन्न हो देवी ने उससे वर माँगने को कहा। उन लोगों ने स्वेच्छा मृत्यु की कामना की। देवी ने उन्हें यह वर दे दिया।

इसके बाद वे जल में संचार करते रहें। एक स्थान पर ब्रह्मा को देख उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। कहा—"आप हमारे साथ युद्ध कीजिए। वरना पद्मासन को छोड़ कहीं भाग जाइये।"

ब्रह्मा डर गये और योग समाधि में स्थित विष्णु से प्रार्थना की—"महात्मा! जाग जाइये! दो राक्षस मेरा वध करना चाहते हैं। मेरी रक्षा कीजिए।"

विष्णु योग निद्रा से जागे नहीं। इस पर ब्रह्मा ने आदि शक्ति योग निद्रा से ही प्रार्थना की—"जगन्माता! इन राक्षसों का वध करने के लिए आप विष्णु को जगाइये या आप ही मेरी रक्षा कीजिए।" फिर क्या था, उसी वक़्त योग निद्रा विष्णु को छोड़कर चली गई। विष्णु को निद्रा से जागते देख ब्रह्मा परमानंदित हुए।

अपात्र दान

कमलनाथ बड़ा ही आलसी था। उसकी माता ने धन कमाने की सलाह देकर उसे घर से निकाल दिया। वह गाँव के बाहर एक उजड़े मंदिर में जाकर चिंतित बैठा रहा।

मंदिर में वास करनेवाले पिशाच ने प्रवेश करके पूछा–"भाई, तुम दुखी क्यों हो? तुम्हें कैसी तक़लीफ़ है?" कमलनाथ ने धन की माँग की। पिशाच उसके हाथ धन की गठरी देकर बोला–"आज से तुम खुश रहो।"

अपने पुत्र को धन की गठरी के साथ लौटे देख उसकी माँ बड़ी खुश हुई और बोली–"तुम यह धन ले जाकर व्यापार करो।" ये बातें सुनते ही कमलनाथ का कलेजा कांप उठा। धन के मिलने से उसका श्रम बढ़ता जा रहा है।

उस रात को पिशाच ने प्रवेश करके पूछा–"क्यों भाई? अब तो सुखी हो न?" कमलनाथ ने बताया कि धन के प्राप्त होने से उसकी तक़लीफ़ें दस गुने अधिक हो गई हैं।

"मैं अपात्र दान करके पिशाच बन गया, अब पात्रोचित दान करके मुक्ति पानी चाही। लेकिन तुम भी अपात्र व्यक्ति हो।" यों कहकर पिशाच धन की गठरी वापस ले गया।
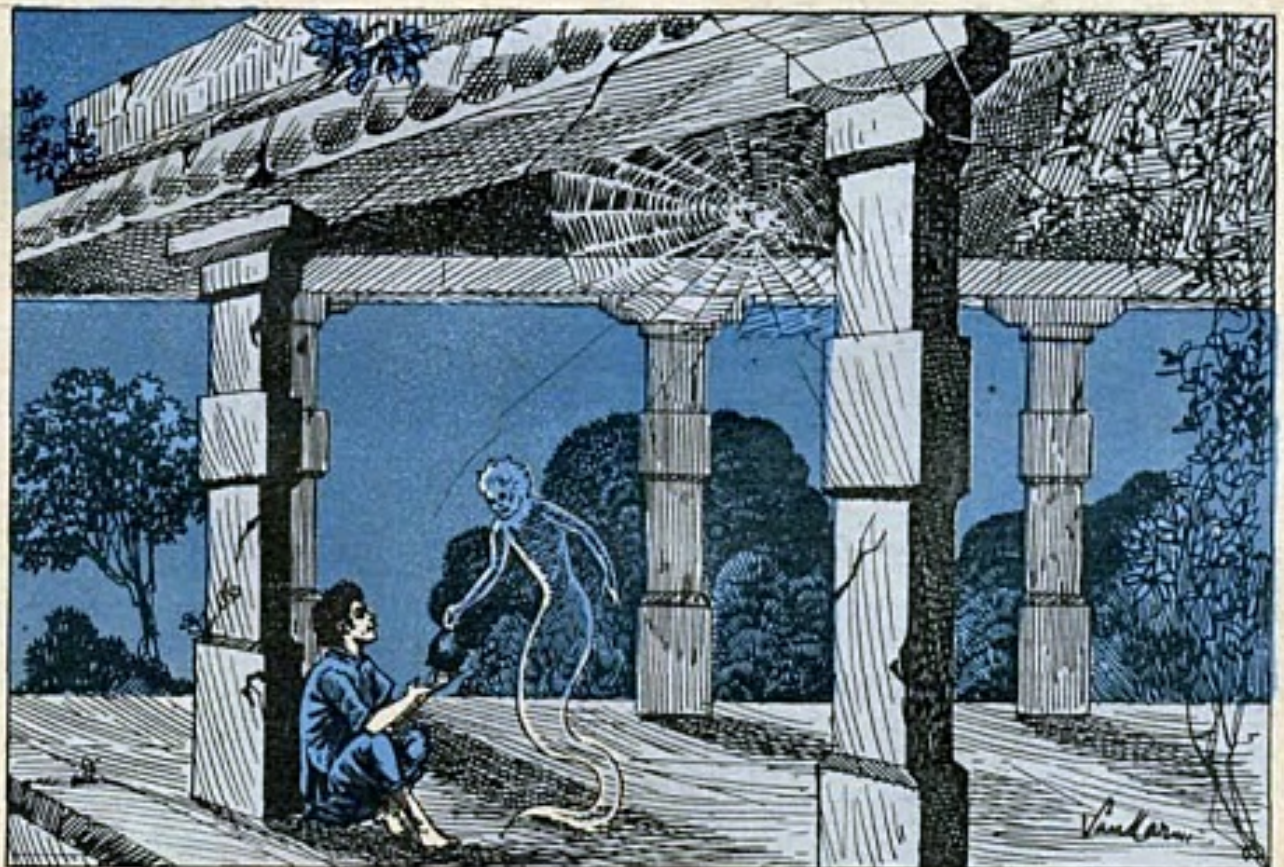
चिरंजीवी की कथा

कल्याणस्वामी विन्ध्याचल के जंगलों में आश्रम बनाकर विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। जो भी उनके पास पहुँचता, उससे वे यही सवाल करते–"तुम क्यों विद्या प्राप्त करना चाहते हो?" प्राय: सभी विद्यार्थियों से उन्हें यही जवाब मिलता–"अपना पेट भरने के लिए।" यह उत्तर पाकर वे अत्यंत निराश हो जाते।

लेकिन चिरंजीवी नामक एक शिष्य ने कहा–"मैं अपनी विद्या मानव समाज की सेवा में लगाना चाहता हूँ।" यह उत्तर सुनकर कल्याण स्वामी बहुत प्रसन्न हुए। पाँच साल तक शिक्षा देकर विदा करते समय चिरंजीवी को याद दिलाया–"तुमने जैसा वचन दिया, मानव समाज की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दो।"

चिरंजीवी अपने गुरु के आशीर्वाद लेकर एक छोटे से गाँव में पहुँचा। वहीं पर अपना स्थिर निवास बनाया। वह गाँव की जनता को भले-बुरे का वर्णन करके सुनाया करता था। गाँव के लोग भी उसके प्रति अत्यंत आदर का भाव रखते थे।

एक सप्ताह बाद चिरंजीवी को लुटेरों का समाचार मिला कि महीने में एक बार दस लुटेरे उस गाँव पर हमला करते हैं, जो भी उनका सामना करता, उनकी खूब मरम्मत करके सारे घर लूटकर चल देते हैं।

यह खबर मिलते ही चिरंजीवी ने सारे गाँववालों को इकट्ठा करके समझाया–"एक मनुष्य के लिए कायरता से बढ़कर कोई बड़ा शाप और अपमान दूसरा कोई नहीं है। इतने सारे युवकों से भरे इस गाँव को दस लुटेरे डरा-धमकाकर दिन दहाड़े लूटना कैसे? आप लोग हिम्मत के साथ उनका सामना कीजिए और उन्हें पकड़कर राजा के हाथ सौंप दीजिए।"

चिरंजीवी की बातें सुनने पर जागृति पाकर पच्चीस युवक लुटेरों का सामना करने के लिए हिम्मत के साथ आगे आये।

इसके दस दिन बाद लुटेरों ने गाँव पर हमला किया। चिरंजीवी की प्रेरणा से पच्चीस युवकों ने उनका सामना किया।

लेकिन लाठी व भाले चलाने में दक्ष लुटेरों ने कुछ ही मिनटों में युवकों को हराया और पूछा–"आज तक तुम लोगों में हमारा सामना करने की जो हिम्मत न थी, वह आज कैसे आ गई? किसी दुष्ट ने तुम लोगों को भड़काया होगा! उसका नाम बतला दो, तो हम तुम को छोड़ देंगे।"

युवकों ने चिरंजीवी का नाम बताने से संकोच किया, मगर चिरंजीवी ने आगे बढ़कर लुटेरों से कहा–"तुम लोग जो अत्याचार कर रहे हो, उसका सामना करने का मैंने ही युवकों को प्रोत्साहित किया है।"

डाकुओं ने चिरंजीवी को खूब पीटा, वह बेहोश हो गया। तब उन लोगों ने धमकी दी–"इस बार हम तुम लोगों को छोड़ देते हैं। फिर कभी तुम लोगों ने हमारा सामना करने की धृष्टता की तो सारे गाँव को जलाकर राख कर देंगे।" इसके बाद सारे घर लूटकर वे अपने रास्ते चलते बने।

चिरंजीवी घायल हो मौत की घड़ियाँ गिन रहा था। उस गाँव में कोई वैद्य नहीं था। कुछ लोगों ने उसे दूर के

गाँव में ले जाकर उसका इलाज कराया। एक दिन वह बेहोश ही रहा। फिर खतरे की हालत से बचकर धीरे-धीरे चंगा होने लगा। जो लोग उसे वैद्य के पास ले गये थे, वे यह सोचकर चिरंजीवी के होश में आन के पहले ही अपने गाँव लौट गये कि यदि वह फिर से उनके गाँव में आएगा तो सारे गाँव के लिए खतरा पैदा हो सकता है।

मगर पंद्रह दिन बाद चिरंजीवी एक और आदमी को साथ ले उस गाँव को लौट आया। उसका फिर से गाँव में आना किसी को भी अच्छा न लगा।

चिरंजीवी ने गाँव के कुछ बुजुर्गों से मिलकर समझाया–"इस गाँव में कोई वैद्य नहीं है, इसीलिए आप लोगों को मुझे किसी दूसरे गाँव में ले जाना पड़ा है। प्रत्येक गाँव में कम से कम एक वैद्य का रहना जरूरी है। इसीलिए मैं इस वैद्य को यहाँ पर ले आया हूँ। ये इलाज करने में बड़े ही दक्ष हैं। इस गाँव में स्थाई निवास बनाने के लिए मैंने इनको मनवा लिया है।"

चिरंजीवी की बातें सुन गाँव के बुजुर्गों का दिल पिघल गया। लुटेरों के द्वारा सबसे ज्यादा चिरंजीवी के लिए ही प्राणों का खतरा है! फिर भी जब वे सब लोग डर रहे थे, तब चिरंजीवी अपने प्राणों की परवाह किये बिना गाँव की भलाई करने के ख्याल से वैद्य को भी बुला लाया है।

इस बार गाँव के सभी लोगों के मन में चिरंजीवी के प्रति अपार आदर का भाव पैदा हुआ। दूसरी बार जब लुटेरों ने गाँव पर हमला किया तब सैकड़ों की संख्या में गाँव के लोगों ने उनका सामना किया और उन्हें बन्दी बनाकर राजा के हाथ सौंप दिया।

चिरंजीवी ने जब सोचा कि उसके द्वारा उस गाँव का जो उपकार होना था, वह हो गया है। तब गाँववालों से विदा लेकर चिरंजीवी वहाँ से चल पड़ा।

कंजूस

एक गांव में दो व्यापारी थे। एक था बड़ा ही कंजूस और दूसरा नामी दानी। दानी अपनी कमाई में से अधिकांश भाग दान-धर्म के पीछे ख़र्च कर देता था। कंजूस व्यापारी दानी के यश को देख मन ही मन जलता था। इसलिए उसका अपमान करने के लिए वह मौक़े का इंतजार करने लगा।

एक बार चौपाल के पास दानी व्यापारी लोगों को कुछ सुना रहा था। गांववाले मन लगाकर दानी की बातें सुन रहे थे। कंजूस व्यापारी उधर से निकला। उस दृश्य को देख ईर्ष्या से भर उठा और बोला—"अजी, क्या बात है? सब के सापने डींग हांक रहे हो?"

"महाशय, कोई ख़ास बात नहीं। मैं यही बता रहा था कि तुम कैसे धर्मात्मा हो और तुम्हारे भीतर कितनी मात्रा में दानशीलता कूट-कूटकर भरी हुई है।" दानी ने तपाक से उत्तर दिया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जनवरी १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

★

Bishan Maheshwari

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

सितम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : वर्तमान की निश्चितता !

द्वितीय फोटो : भविष्य की चिंता !!

प्रेषक : सुशील कुमार 'अकेला', थाना चौक, पो. खगड़िया-८५१२०४ (बिहार)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

"बैरागी" का देहावसान

आलूरि बैरागी चौधरी का जन्म : ५-९-१९२५ को तथा देहावसान : ९-९-१९७८ को हुआ । जन्मस्थान : आइता नगर, तेनाली, आन्ध्र प्रदेश । एक शिक्षक के रूप में अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करके आप ने 'चन्दामामा' के संपादक मण्डल में हिन्दी चन्दामामा के संपादक पर थोड़े समय तक काम किया । वे तेलुगु के एक कुशल कथाकार और कवि थे । "त्रिशंकु स्वर्ग", "दिव्य भवन" उनके कहानी-संग्रह हैं । 'चीकटि नीडलु' और 'नूतिलो गोंतुकल' उनके काव्य संकलन हैं । हिन्दी में "पलायन" नाम से उनका कविता-संग्रह प्रकाशित हुआ जो अत्यंत लोकप्रिय हुआ है । हम उनकी आत्मा की शांति की कामना करते हैं ।

आनंद द्वीप!
कॅड्बरिज़
जेम्स
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-1 HIN

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानियाँ

प्लाक (Plaque)
दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली अदृश्य परत, जिसे साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटार जम जाता है।

टारटार (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ों में सूजन और तकलीफ़, बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से खून
कमज़ोर और खोखले मसूड़ों को ब्रश से साफ़ करते समय खून निकल सकता है। इससे दर्द भले ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

खिले हुए नारंगी रंग के पैक में

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं:

नियमित रूप से, ब्रश से दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए, मसूड़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न से दूर रहिए.

दाँतों की सही देखभाल के लिए हर रात और सवेरे अपने दाँतों की सही ढंग से सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये फोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कीजिये। साथ ही फोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये क्योंकि यह दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये खास तौर से बनाया गया है।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूड़ों की रक्षा" दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना-पुस्तिका। डाक-खर्च के लिये २० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पते पर लिखिये: फोरहॅन्स डेन्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बॅग नं. ११४६६, डिपार्टमेंट R-179-180 बम्बई-४०० ०२०
अपनी पसंद की भाषा अवश्य लिखिये।

फोरहॅन्स

दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

180F-203 R HN

दीवाली मनाओ
खुशियों के पटाखे चलाओ

पटाखों की दुनिया !

हमारे देश की तरह दूसरे देशों में भी त्योहारों और खुशी के अवसर पर, तरह-तरह के पटाखे चलाए जाते हैं, जैसे राकेट, पिन-वील और रोमन कैंडल्स आदि.

अमरीका में 4 जुलाई को, उनके स्वतंत्रता दिवस पर. इटली में ईस्टर के पहले शनिवार को. चीन में फरवरी के महीने में, नए वर्ष पर.

इस तरह और देशों में भी पटाखे चलाने का रिवाज है.

दीवाली की बधाई !

त्योहारों के दिन आ गए. पटाखे, मिठाई और खिलौने लेने के लिए अभी से बचत करना शुरू कर दीजिए और बैंक ऑफ़ बड़ौदा में अपना बचत-खाता खुलवा लीजिए. इस खाते का नाम है—'माइनर्स सेविंग स्कीम'. 7 साल से 13 साल के सभी बच्चे यह खाता खुलवा सकते हैं. साल में सौ पर $4\frac{1}{2}$ रु. ब्याज भी मिलता है. अगर आप 10 साल के हों तो अपने आप भी यह खाता खुलवा सकते हैं.

अपने पापा या मम्मी से कहिए, आप को बैंक ऑफ़ बड़ौदा की किसी पास वाली शाखा पर ले जाएं, मैनेजर से मिलवाएं और आपका अपना खाता खुलवाएं.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

(भारत सरकार उपक्रम)

भारत और विदेशों में—बेल्जियम, फिजी द्वीप समूह, गयाना, केन्या, मारिशस, सेशैल्स, ओमन सल्तनत, संयुक्त अरब अमीरात और यू. के. में 1250 से भी अधिक शाखाओं का विस्तृत जाल,

70 वर्ष से बैंकिंग सुविधा, 25 वर्ष से विदेशों में प्रसार

U-BOB-MS-3/8

नन्हें मुन्ने
प्यार चाहते, प्यार मिले तो बढ़ते जाते
PARLE
Gluco
प्यार का उपहार
पारले ग्लुको—
स्वाद में निराले
शक्ति से भरपूर
दूध, गेहूं, शक्कर और ग्लूकोज़ के
स्वाद और पौष्टिक गुणों से भरपूर.
पारले
ग्लुको
भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट
—वर्ल्ड एवॉर्ड विजेता
50
OUR GOLDEN YEAR OF
THANKSGIVING
everest/78/PP/131-hn